चन्दामामा
जून १९९७
6

अपने प्यारे चहेते के लिए जो हो दूर सुदूर
है न यहाँ अनोखा उपहार जो होगा प्यार भरपूर

चन्दामामा

प्यारी-प्यारी सी चंदामामा दीजिए उसे उसकी अपनी पसंद की भाषा में—
आसामी, बंगला, अंग्रेजी, गुजराती, हिन्दी, कन्नड
मलयालम, मराठी, उड़िया, संस्कृत, तमिल या तेलुगु
—और घर से अलग कहीं दूर रहे उसे लूटने दीजिए घर की मौज-मस्ती

चन्दे की दरें (वार्षिक)

आस्ट्रेलिया, जापान, मलेशिया और श्रीलंका के लिए

समुद्री जहाज़ से रु. 129.00 वायु सेवा से रु. 276.00

फ्रान्स, सिंगापुर, यू.के., यू.एस.ए.,
पश्चिम जर्मनी और दूसरे देशों के लिए

समुद्री जहाज़ से रु. 135.00 वायु सेवा से रु. 276.00

अपने चन्दे की रकम डिमांड ड्रॉफ्ट या मनी ऑर्डर द्वारा
'चन्दामामा पब्लिकेशन्स' के नाम से निम्न पते पर भेजिए:

सर्क्युलेशन मैनेजर, चन्दामामा पब्लिकेशन्स, चन्दामामा बिल्डिंग्स, वडपलनी, मद्रास-६०० ०२६.

भारत में सर्वाधिक बिकने वाले कॉमिक्स
डायमण्ड कॉमिक्स
प्राण
चाचा चौधरी और चमत्कारी मुर्गी
डायमण्ड कामिक्स डाइजेस्ट
प्राण
बिल्लू-8
डायमण्ड कामिक्स डाइजेस्ट
फैण्टम-67
फौलादी सिंह और सुरमा बिट्रोन्स
लम्बू मोटू और नटवर लाल
ताईजी और चालाक पड़ोसन
प्राण
पिंकी
मिस वर्ल्ड
चाचा भतीजा और त्रिकाण्डो का चक्रव्यूह
मैण्ड्रेक-54
जेम्स बाण्ड-57
नये मिनी कामिक्स
प्राण का–पिंकी का तरबूज
चाचा भतीजा और कंकाल कुण्ड
लम्बू मोटू और कराटे किंग
फौलादी सिंह और डबल बम
डायनामाइट–रेड सिगनल
राजन इकबाल और शैतान तिकड़ी
महाबली शाका और जंगल का आतंक
ताऊजी
अंकुर बाल बुक क्लब के सदस्य बनें और बचायें रु. 200/- वार्षिक
अंकुर बाल बुक क्लब घर बैठे डायमण्ड कामिक्स पाने का सबसे सरल तरीका है। आप गांव में हैं या ऐसी जगह जहाँ डायमण्ड कॉमिक्स नहीं पहुंच पाते। डाक द्वारा वी.पी.पी. से हर माह डायमण्ड कॉमिक्स के 6 नये कॉमिक्स पायें और मनोरंजन की दुनिया में खो जायें साथ ही ढेरों इनाम पायें।
हर माह छः कॉमिक्स (48/- रु. की) एक साथ मंगवाने पर 4/- रुपये की विशेष छूट व डाक व्यय फ्री (लगभग 7/-) लगातार 12 वी.पी. छुड़ाने पर 13वीं वी.पी. फ्री।
1 वर्ष में महीने | बचत (रु.) | कुल बचत (रु.)
12 | 4/- (छूट) | 48.00
12 | 7/- (डाक व्यय) | 84.00
1 | 48/- (13वीं वी.पी. फ्री) | 48.00
सदस्यता प्रमाण पत्र व अन्य आकर्षक 'उपहार', स्टिकर और 'डायमण्ड पुस्तक समाचार' फ्री | 20.00
200.00
सदस्य बनने के लिए आप केवल संलग्न कूपन को भरकर भेजें और सदस्यता शुल्क के 10 रु. डाक टिकट या मनी आर्डर के रूप में अवश्य भेजें। इस योजना के अन्तर्गत हर माह 20 तारीख को आपको वी.पी. भेजी जायेगी जिसमें छः कॉमिक्स होंगी।
हाँ! मैं "अंकुर बाल बुक क्लब" का सदस्य बनना चाहता/चाहती हूं और आपके द्वारा दी गई सुविधाओं को प्राप्त करना चाहता/चाहती हूं। मैंने नियमों को अच्छी तरह पढ़ लिया है। मैं हर माह वी.पी. छुड़ाने का संकल्प करता/करती हूं।
नाम
पता
डाक
जिला
पिनकोड
सदस्यता शुल्क 10 रु. डाक टिकट/मनीआर्डर से भेज रहा/रही हूं।
मेरा जन्म दिन
नोट : सदस्यता शुल्क प्राप्त होने पर ही सदस्य बनाया जायेगा।
नई अमर चित्रकथायें (मूल्य प्रत्येक 15/-)
• चाणक्य • विशालकाय बौना • अक्लमंद बीरबल • मसखरा गोपाल • जातक कथायें (पुन कथाएं)
• द्रोण • नारद की कथाएं • द्रौपदी • ध्रुव • सुकन्या
डायमण्ड कामिक्स प्रा. लि. X-30, ओखला इन्डस्ट्रियल एरिया, फेज-2, नई दिल्ली-110020

चन्दामामा

जून १९९७

एक प्रति : ६.००
वार्षिक चंदा : ७२.००

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी

शिक्षा सभी को

जून और जुलाई में भारत में पाठशालाएँ पुन: खुलेंगी। शैक्षिक वर्ष पुन: आरंभ होगा। यह आश्चर्य की बात है कि जहाँ इन दो महीनों में लाखों बच्चे पाठशालाओं में भर्ती होते है, वहीं लाखों बच्चे बाहर ही रह जाते हैं और पाठसालाओं में भर्ती नहीं होते। वे या तो घरों में ही रहेंगे अथवा होटलों, कारखानों आदि उद्योगों में नौकरी करते रहेंगे। कभी-कभी बच्चे ही इस मार्ग को चुनते है और कभी-कभी उनके माता-पिता उनको ऐसा करने पर मजबूर करते हैं, क्योंकि इससे उनकी आमदनी होती है। अपनी आर्थिक समस्या को सुलझाने के लिए माता-पिता अपने बच्चे का सहारा लेते हैं।

'शिक्षा सभी को' नारा सिर्फ़ नारा ही बनकर रह जाता है। इसे कार्यान्वित करना असंभव हो जाता है। विद्वान, समाज-सेवक तथा मानव-अधिकारों के संरक्षक परस्पर विचार-विनिमय करने लगते हैं कि कैसे इस नारे को वास्तविक बनाया जाए।

यह स्थिति आज की नहीं बल्कि देश की स्वतंत्रता-प्राप्ति के समय से चली आ रही है। हमारे संविधान में स्पष्ट बताया गया कि उचित व अनिवार्य शिक्षा चौदह सालों की आयु तक सबको समान रूप से दी जायेगी।

किन्तु संविधान के इस आश्वासन को हम अमल में नहीं ला सके। क्या इसका कोई कारण है? एक नहीं, बल्कि अनेकों हैं। अपने परिवार के आर्थिक भार को कम करने के लिए बच्चों को काम पर जाना पड़ता है। अगर वे ऐसा नहीं करेंगे तो उन्हें भूख से तड़पना होगा, पहनने के लिए कपड़े नहीं होंगे और शायद रहने के लिए घर भी न हों।

अत: हमें एक ऐसे क्रियाशील वातावरण की सृष्टि करनी होगी, जहाँ बच्चों को काम पर जाने की ज़रूरत न पड़े। कम से कम अगर उन्हें एक वक्त का खाना दिलाने में हम सफल हों तो इस बात से हमें तृप्ति होगी कि हमने इस नारे को अमल में ले आने की दिशा में कुछ तो किया।

वर्ष : ४७ जून १९९७ अंक : ८

एक प्रति : रु. ६/- वार्षिक चन्दा : रु ७२/-

समाचार-विशेषताएँ
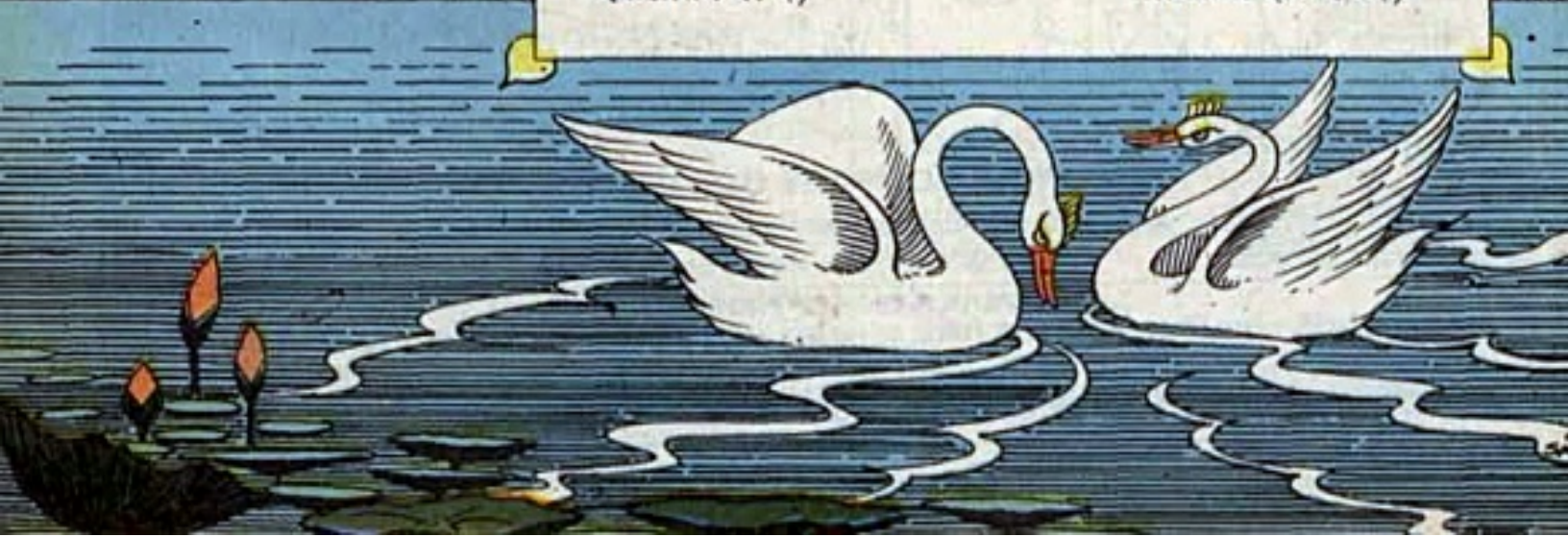
रूस - बेलारस का पुनर्मिलन

मई २० को रूस और बेलारस एक फेडरेशन के रूप में पुन: ऐक्य होने जा रहे हैं। पाँच वर्षों के पहले सोवियत यूनियन के पतन के समय पंद्रह रिपब्लिक अलग हो गये। तब उन राज्यों की जनता को अपने स्वतंत्र होने पर बड़ी ही खुशी हुई। किन्तु यह खुशी अधिक काल तक बरकरार नहीं रही।

१९९१ में सोवियत यूनियन छिन्नाभिन्न हो गया। इस वजह से उन-उन रिपब्लिकों की आर्थिक स्थिति क्षीण हो गयी। दैनिक आवश्यकताओं की वस्तुओं के दाम आकाश को छू गये। आखिर स्थिति इस हद तक पहुँची कि कुछ राज्यों में रोटी के लिए घंटों भर क़तार में खड़ा होना पड़ा। बहुत-से लोगों को लगा कि सोवियत यूनियन में कम्यूनिस्टों के शासन-काल में ही हमारी हालत बेहतर थी। वर्तमान दुस्थिति को देखते हुए वे महसूस करने लगे कि वे तभी वहीं सुखी थे। रूस से फिर से ऐक्य होने में ही अपनी भलाई महसूस करने लगे।

रूस, बेलारस (श्वेत रूस) के बीच मतभेद नहीं के बराबर हैं। दोनों प्रांतों की मातृभाषा रूसी है। अपने उन्नत विद्या-प्रमाणों व तकनीकी अभिवृद्धि के लिए बेलारस प्रसिद्ध है। इसी कारण पूर्व सोवियत यूनियन के योजना-आयोग ने एलक्ट्रानिक्स, मशीन निर्माण, पेट्रो केमिकल्स, आहार आदि से संबंधित उद्योगों की स्थापना वहीं की। उन उद्योगों के लिए आवश्यक कच्चा माल रूस से ही भेजा जाता था। अलावा इसके बेलारस अति मुख्य स्थान था, इसलिए सोवियत यूनियन ने उसे अपने माल को नियति करने के लिए मुख्य केंद्र बनाया, जहाँ से यूरोपीय देशों को माल भेजा जाता था।

पुन: ऐसी स्थिति बने, इसके लिए यह आवश्यक है कि ये दोनों देश पुन: एक हो जाएँ। अगर इसकी ज़रूरत दोनों देशों व वहाँ की प्रजा ने महसूस की तो इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं। यहाँ एक और विषय का उल्लेख भी आवश्यक है। सोवियत यूनियन के विच्छिन्न हो जाने के बाद रूस में चुनाव हुए। इन चुनावों में बोरिस एलस्तिन अध्यक्ष निर्वाचित हुए। बेलारस ने कुछ हद तक उनके चुने जाने में सहयोग दिया।

१९९६ के प्रारंभ काल में विविध क्षेत्रों में पारस्परिक सहयोग के लिए एक समझौता हुआ, जिसपर दोनों देशों ने हस्ताक्षर किया। अप्रैल, २ को फेडरेशन की स्थापना के प्रस्ताव पर भी दोनों देशों ने हस्ताक्षर किया। रूसी अध्यक्ष एलस्तिन व बेलारस के अध्यक्ष लुकषेंको मई २० को इस समझौते पर हस्ताक्षर करनेवाले हैं। इसके बाद दोनों देशों के सदनों को इस समझौते को मान्यता देनी होगी और इसका दृढ़ीकरण करना होगा।

बेलारस के कुछ लोगों का कथन है कि दोनों देशों के ऐसे फेडरेशन से रूस ही को अधिक लाभ होगा। राजधानी मिनस्क में इस फेडरेशन की स्थापना के विरुद्ध आँदोलन भी हो रहे हैं। पर, अध्यक्ष लुकषेंको ने इस विषय में जनता की राय जाननी चाही। इसलिए उन्होंने 'रेफरेंडम' (जनमत संग्रह) रखा और अधिक प्रतिशत लोगों की सम्मति पायी।

हमें अब देखना है कि जो देश इसके पहले सोवियत यूनियन से अलग हो गये, क्या वे इस फेडरेशन में शामिल होने आगे बढ़ेंगे ?
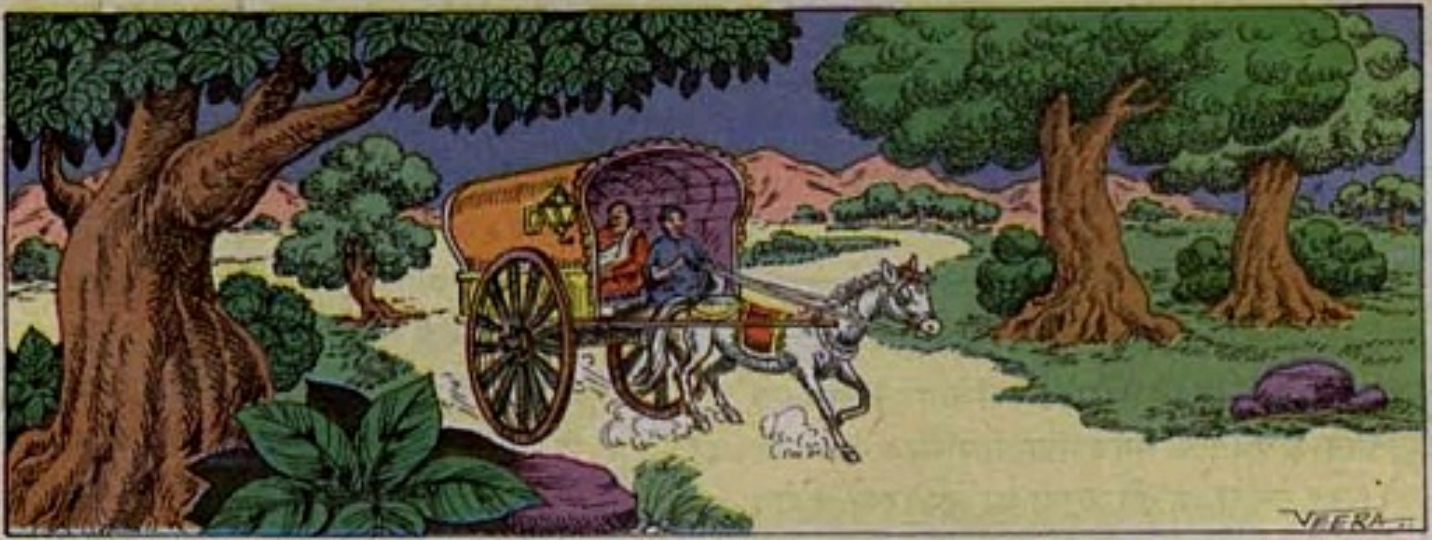
राधेश्याम का हृदय-रोग

रामनगर के ज़मींदार के दरबार में राधेश्याम नामक एक पंडित था। दरबार के जो कविगण थे, उनकी ग़लतियों को ढूँढ निकालना उसका काम था। ज़मींदार राधेश्याम के पांडित्य से बहुत ही प्रभावित था। इस कारण किसी भी कवि को पहले राधेश्याम की प्रशंसा पानी पड़ती थी।

राधेश्याम घूसखोर नहीं था परंतु उसे अपने ओहदे का बड़ा ही गर्व था। जो कवि उससे मिलने आते थे, वह उन कवियों की हँसी उड़ाता था। उसकी बोलने की शैली भी विचित्र होती थी। उसकी बातों से लगता था मानों उसकी टक्कर का कोई है ही नहीं। उसके विरुद्ध बोलने की किसी की हिम्मत ही नहीं होती थी। अगर कोई ऐसा साहस करता तो उससे सहा नहीं जाता था। जो उसके हाँ में हाँ मिलाते थे और जो ज़मींदार के सन्निहित व्यक्ति थे, उन्हीं का वह आदर करता था। बाक़ी को वह हीन मानता था।

ज़मींदार भला मानुष था। न ही वह घमंडी था, न ही अहंकारी। वह किसी की भी बुराई सुनना पसंद नहीं करता था। किसी की बुराई करनेवाले को पास भी पटकने नहीं देता था। इसलिए राधेश्याम के दुर्गुणों के बारे में वह जान नहीं पाया।

ज़मींदार एक दिन गाड़ी में बैठकर पड़ोस के गाँव में जाने लगा। रास्ते में गाड़ी का पहिया ख़राब हो गया। गाड़ीवाले ने गाड़ी रोक दी और ज़मींदार से कहा "मालिक, पास ही आम का बग़ीचा है। आप वहाँ विश्राम कीजिये। गाड़ी जब ठीक हो जायेगी, मैं खुद आकर बुलाऊँगा।"

ज़मींदार ने जब आम के बग़ीचे में प्रवेश किया तब देखा कि कुछ लोग एक पेड़ के नीचे बैठे हुए हैं। पास जाकर देखा तो सुना

निरंजन

कि एक व्यक्ति बड़े ही मधुर स्वर में गा रहा है। वह पद्य पर पद्य सुनाता जा रहा है और साथ ही उसका अर्थ भी समझाता जा रहा है। ज़मींदार भी उस भीड़ में बैठ गया और मंत्रमुग्ध होकर सुनने लगा।

थोड़ी देर बाद उस गायक ने उपस्थित व्यक्तियों से कहा "आज इतना काफ़ी है। कल फिर मिलेंगे। अगर आप यहीं रह जाएं तो मुझे शायद मुसीबत का सामना करना पड़े। आप लोग चले जाइये और अपने-अपने काम कीजिये।"

सबके चले जाने के बाद ज़मींदार ने उससे उसके बारे में पूछताछ की। उसका नाम है गोविंद। स्वरचित काव्य सुनाने वह रामनगर के ज़मींदार के पास गया तो राधेश्याम ने उसे ऐसा करने नहीं दिया। अब वह अपना पेट भरने के लिए इस बग़ीचे के माली का काम कर रहा है। हर रोज़ खेत में काम करके आये किसानों को अपनी कविता सुनाता है और उसका अर्थ विशद रूप में बताता भी है।

"ऐसा करने से तुम्हारा क्या फ़ायदा होता है ?" ज़मींदार ने पूछा।

"और लोग मेरा काव्य सुनें, आनंद लूटें, उसी में मुझे आनंद मिलता है। मेरे मन को तृप्ति मिलती है।" गोविंद ने कहा।

"श्रोताओं के अनुसार काव्य का महत्व व मूल्य बढ़ता है। रामनगर के ज़मींदार को अपना काव्य सुनाने का सबल प्रयत्न तुमने नहीं किया। यह तुम्हारी ग़लती है"। ज़मींदार ने कहा।

"मेरी दृष्टि में उस ज़मींदार से ये श्रोता
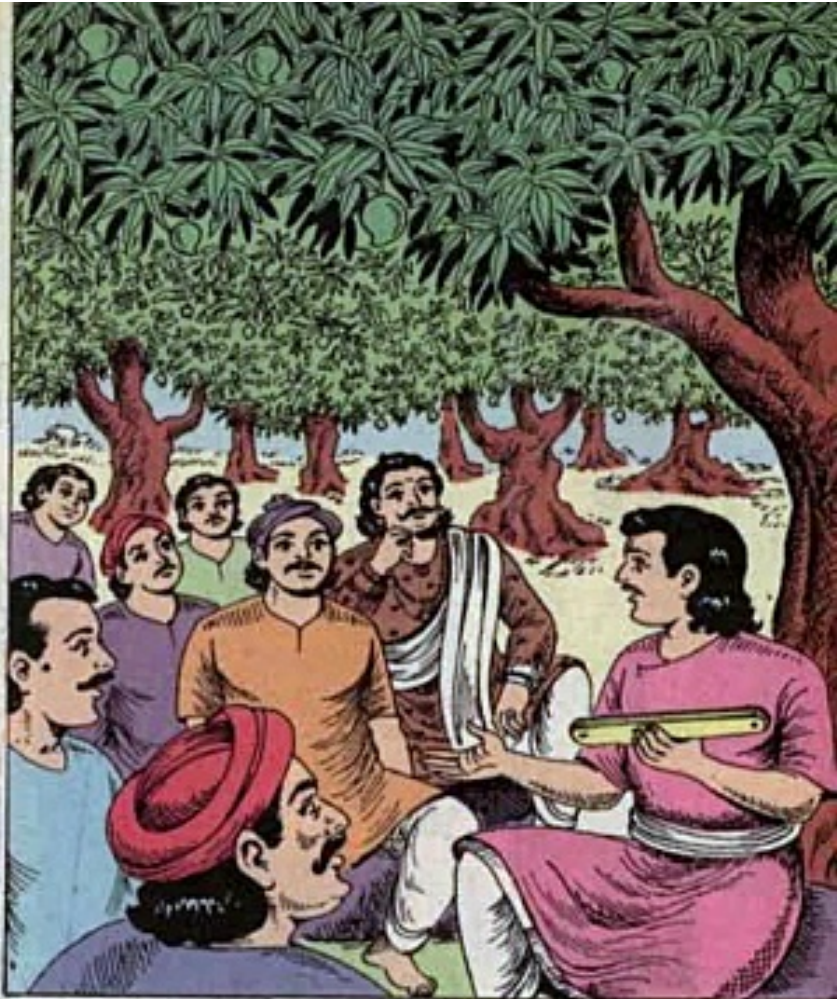
ही बड़े हैं। कविता सुनकर आनंद लूटने के लिए इनके बीच राधेश्याम जैसा आदमी नहीं है, जो रुकावट बनकर खड़ा हो जाए। ये हर दिन मेरे पास आते हैं और बड़े ही चाव से मेरी कविता सुनते हैं। भले ही मैं रुक जाऊँ किन्तु ये कभी भी रोकने के लिए नहीं कहते। तब इससे मुझे आत्म-तृप्ति मिलती है।" गोविंद ने कहा।

तब ज़मींदार ने गोविंद को बता दिया कि वह कौन है। फिर कहा "राधेश्याम महान पंडित है। इस विषय में कहीं भूल हो गयी। मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे दरबार आओ और मेरा सत्कार स्वीकार करो।"

जब गोविंद को मालूम हुआ कि वह व्यक्ति कोई और नहीं, स्वयं रामनगर का ज़मींदार है तो उसे अपने व्यवहार पर पछतावा हुआ।

बोला "अनजाने में मुझसे कोई भूल हो गयी तो माफ़ कीजिये। राधेश्याम जैसी रुकावट के होते हुए मैं दरबार में आना नहीं चाहता।"

ज़मींदार ने अपनी अंगूठी गोविंद को दी और कहा "इसे दिखाने पर तुम सीधे बिना किसी रुकावट के मेरे पास आ सकते हो। आज पंचमी है। दशमी के दिन मैं तुम्हारी प्रतीक्षा करूँगा।" गोविंद ने विनयपूर्वक नमस्कार किया। इतने में गाड़ीवाला आया और ज़मींदार को बुला ले गया।

दशमी के दिन गोविंद, ज़मींदार से मिला। भरे दरबार में काव्य-पठन किया। ज़मींदार बहुत ही खुश हुआ और मंत्री को आदेश दिया कि गोविंद को हज़ार अशर्फ़ियाँ दी जाएँ। तब राधेश्याम ने हस्तक्षेप करते हुए कहा "प्रभू, इस दरबार में सम्मान पानेवाले की योग्यता का निर्णायक मैं हूँ। मेरा निर्णय है कि यह व्यक्ति सम्मान पाने का हक़दार नहीं है।"

"बहुत बार मैंने आपके निर्णयों को माना। एक बार, मेरा निर्णय भी आप मान जाएँगे तो अच्छा होगा। यह केवल मेरी विनती है" ज़मींदार ने मुस्कुराते हुए कहा।

"प्रभू, योग्य व्यक्तियों के निर्णयों को मैं सदा मानता हूँ, उनका आदर करता हूँ। किन्तु मेरी राय में इस दरबार में मेरे अलावा कोई और नहीं है, जो कवि की योग्यता की परख कर सके।" राधेश्याम ने कहा।

ज़मींदार का चेहरा गुस्से से लाल हो गया। बड़ी मुश्किल से उसने अपने को संभाला और कहा "योग्यता के बारे में मुझे शायद मालूम न हो, लेकिन मैं इतना तो जानता हूँ कि कौन सम्मान पाने का हक़दार है।" कहकर दिवान से कहा "दिवानजी, मेरे कहे अनुसार कवि का सम्मान कीजिये।"

राधेश्याम से यह अपमान सहा नहीं जा सका। उसने कहा "अपने अधिकार के अहंकार में आपने अपना विवेक खो दिया। ऐसा करने पर आपका अहित होगा। पंडित होने के नाते मैं आपको सावधान कर रहा हूँ। मेरी बात मानिये और इस सम्मान को रोक दीजिये। ऐसा नहीं होगा तो आगे से कवियों की भूल-चूकों को चुनने की जिम्मेदारी मेरी नहीं होगी।"

"दूसरे के अहंकार के बारे में बोलने के पहले अपने अहंकार के बारे में सोच लीजिये। पंडित को अहंकार शोभा नहीं देता। आपको मेरी यह चेतावनी है" ज़मींदार ने कहा।

राधेश्याम से यह घोर अपमान सहा नहीं

गया। घर पहुँचने के बाद पत्नी से सारी बातें कहीं और ज़मींदार के बारे में भला-बुरा कहा। उसने पति से कहा "आवेश में आकर यह मत भूलिये कि आप कौन हैं और आपका क्या स्थान है। वे प्रभू हैं। उनके निर्णय का पालन नहीं करेंगे तो हमारा अस्तित्व ही मिट जायेगा।"

उस समय गोविंद ने वहाँ आकर कहा "महाशय, मुझे इस बात का दुख है कि मेरे कारण ज़मींदार आपसे नाराज़ हो गये। विश्वास कीजियेगा, इसमें मेरी कोई ग़लती नहीं। सब कुछ अकस्मात् हो गया। मैं आपके प्रति आदर-भाव रखता हूँ। अगर आप बता सकें कि मेरी कविता में क्या कमी है, मैं क्यों सम्मान का हक़दार नहीं हूँ तो मैं अपनी तृटियों को सुधारूँगा। यही जानने मैं आपसे मिलने आया। आप जो भी कहना चाहते हैं, नित्संकोच कहिये।"

राधेश्याम ने गुस्से में आकर कहा "राजा का सम्मान पाने के बाद मुझसे तुम्हें क्या काम? मैं जान गया हूँ कि मेरा मज़ाक उड़ाने के लिए तुम यहाँ आये हो। तक्षण ही यहाँ से चले जाओ।"

"किसी दूसरे कवि से बातें करने की क्या यह पद्धति है? आप अहंकारी हैं। अपने इस अहंभाव का दंड आप अवश्य भुगतेंगे" कहकर गोविंद वहाँ से चला गया।

राधेश्याम उसकी बातों पर आपे से बाहर हो गया और गोविंद को गालियाँ देने लगा। गालियाँ देते-देते उसकी छाती में दर्द होने लगा और धड़ाम से ज़मीन पर गिर गया। उसकी पत्नी घबरा गयी और तुरंत वैद्य को बुलवाया। वैद्य ने राधेश्याम की परीक्षा करने के बाद कहा "यह तीव्र हृदय-रोग है। योगापुर का सनातन नामक वैद्य ही इसकी चिकित्सा कर सकता है। किन्तु वह राजा और ज़मींदारों को छोड़कर किसी और की चिकित्सा नहीं करता।"

ज़मींदार को यह बात जब मालूम हुई तो उसने तुरंत राधेश्याम को योगापुर भिजवाया। सनातन से चिकित्सा करवाने का प्रबंध भी किया। सनातन ने अनेकों प्रकार से उसकी परीक्षाएँ की और कहा "यह रोग मानसिक है। असली कारण जानने के बाद ही चिकित्सा हो सकती है। तब तक इसके चंगे होने का सवाल ही नहीं उठता।"

राधेश्याम ने जो हुआ, सब सनातन को बताया। फिर कहा "ज़मींदार और गोविंद

के अहंकार ने ही मुझे रोगी बना दिया। मुझे मानसिक रूप से घायल कर दिया।''

''ज़मींदार ने तुम्हारी चिकित्सा के लिए आवश्यक प्रबंध किये। गोविंद ने भी तुम्हारे पास आकर जानना चाहा कि उसकी क्या त्रुटियाँ हैं। एक दयाशील है तो दूसरा विनयशील। उनमें खोट निकालना तुम्हारा अहंकार है। पहले तुझे यह दोष त्यजना होगा। नहीं तो यह बीमारी शाश्वत हैं'' वैद्य ने कहा। राधेश्याम ने उसकी बातों पर चिढ़ते हुए कहा ''मैं महापंडित हूँ। मैं जानता हूँ कि अहंकार व आत्मसम्मान में क्या भेद है। आप जानते नहीं हैं, इसीलिए ऐसी बातें कर रहे हैं।''
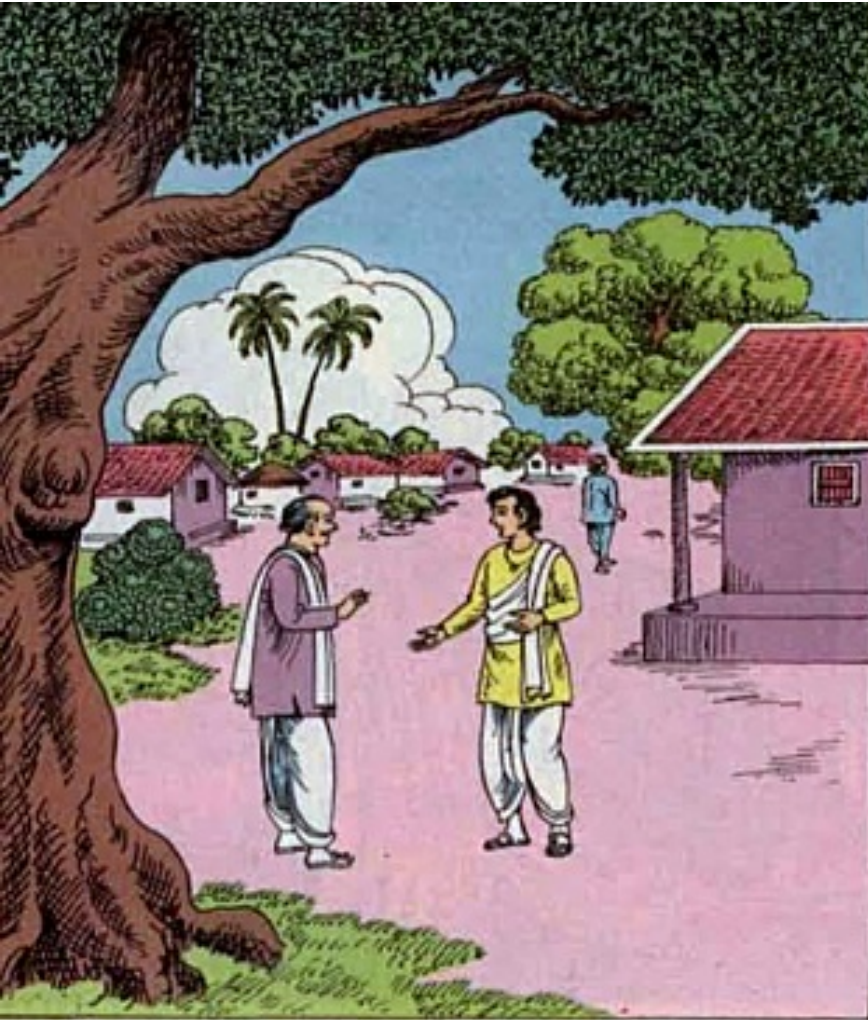
सनातन ने हँसते हुए कहा ''यह सच है। मैं केवल वैद्य हूँ, पंडित नहीं। किन्तु तुम्हारे रोग का मूल कारण जाने बिना चिकित्सा करना मेरे लिए संभव नहीं है। अपने शिष्य को रामनगर भेजकर पूरा विषय जानूँगा। तुम्हारे हृदय-रोग का कारण वहाँ हो तो मालूम पड़ जायेगा।''

सनातन का शिष्य रामनगर गया और राधेश्याम के हृदय-रोग से संबंधित विषय जाना। एक प्रमुख व्यक्ति ने उससे कहा ''राधेश्याम हृदय-रोग से पीडित है तो इसमें आश्चर्य ही क्या? अपने बेटे की भी बात नहीं सुनता। वही करता है, जो वह चाहता है। एक भी ऐसा दिन नहीं जब कि बाप-बेटे आपस में झगड़ते न हों। परिस्थिति इस सीमा पर पहुँच गयी कि उसने अपने बेटे को घर से निकाल दिया। इसी कारण वह हृदय-रोग का शिकार हुआ।''

एक और दूसरे आदमी ने कहा ''मैं इसका मूल कारण जानता हूँ। राधेश्याम के पड़ोस में ही सुग्रीव भी रहता है। दोनों के घरों के बीच साझे की दीवार है। उसको लेकर दोनों हर दिन झगड़ते रहते हैं। इस हृदय रोग का यही कारण है।''

''सुग्रीव कैसा आदमी है? शिष्य ने पूछा।

''राधेश्याम को छोड़कर किसी से उसका कोई बैर नहीं'' उस आदमी ने कहा। शिष्य विषय की संपूर्ण जानकारी पाने में जुट गया।

राधेश्याम की चार एकड़ की ज़मीन है। नौकरों से वह खेती करा रहा है। हर दिन वह उनसे झगड़ता रहता है। एक आदमी ने बताया कि उसके हृदय-रोग का यही कारण है। एक ने कहा कि उसका धोबी ठीक तरह से कपड़े नहीं धोता। इसको लेकर वह धोबी

से झगड़ता रहता है। एक और ने कहा कि दूधवाला दूध में पानी मिलाता है, जिससे राधेश्याम आवेश में आ जाता है और चिल्लाने लगता है।

शिष्य ने लगभग बीस आदमियों से राधेश्याम के बारे में जानकारी पायी। उनमें से हर एक ने उसके हृदय-रोग का अलग-अलग कारण बताया। एक हृदय-रोग के इतने कारण! शिष्य आश्चर्य में पड़ गया और लौटकर सब बातें गुरु से बतायीं।

राधेश्याम ने भी उसकी बातें सुनीं। तब सनातन ने उससे कहा ''सुन लिया न! रामनगर के बहुत-से लोगों को तुम्हारे हृदय-रोग के बारे में पहले से ही मालूम है। वे इसके कारण भी जानते हैं। इतने कारण जो बताये गये हैं, उनमें से तुम्हीं को पता लगाना होगा कि कौन-सा ऐसा मूल कारण है, जिसके कारण तुम हृदय-रोग के शिकार हुए।''

राधेश्याम ने सिर झुकाकर कहा ''आप चाहते हैं कि मैं स्वयं असली विषय आपको बता दूं। मैं जानता हूँ कि जिस दिन मैं आपसे मिला, उसी दिन आप इस रोग का कारण जान चुके। जितने कारण बताये गये हैं, उनमें से मूल कारण क्या है, मैं भी जान गया। वह है, मेरा अहंकार। अगर मैं अहंकार न त्यजूं तो मेरा मन शांत नहीं होगा। अशांति मुझमें घर कर जायेगी। जब तक मेरा मन शांत नहीं होता तब तक यह हृदय-रोग घटनेवाला नहीं है। यही असली बात है ना? किन्तु मैं नहीं जानता कि अपने इस अहंकार को कैसे भगाऊँ। बताइये कि मुझे इसके लिए क्या करना होगा।''

सनातन ने मुस्कुराते हुए कहा ''अच्छा हुआ, तुम जान गये कि तुममें अहंकार भरा पड़ा है। यह सच्चाई जान गये, यही बहुत है। आगे से क्रमशः तुम्हारा अहंकार घटता जायेगा।'' थोड़े दिनों तक वैद्य ने राधेश्याम की चिकित्सा की और भेज दिया।

इसके बाद राधेश्याम को बेटे की बातें सही व वास्तविक लगने लगीं। अड़ोस-पड़ोस के लोग आत्मीय लगने लगे। ज़मींदार अब उसकी दृष्टि में सकल सद्गुण संपन्न व्यक्ति हैं। सबकी त्रुटियाँ क्षमा करने योग्य लगने लगीं। कवियों की कविताओं में त्रुटियाँ दिखाई पड़ नहीं रही हैं।

अंधा भिखारी

हेलापुरी के राम के आलय के पास एक भिखारी भीख माँगता रहता था। वह अपने सामने कपड़े का एक टुकड़ा फैलाता और आलय में आने-जानेवालों से दीन स्वर में कहता रहता कि साहब, जन्म से अंधा हूँ। दान दीजिये।

सुगंधिपुर से एक युवक आया। उसने भगवान का दर्शन किया और लौटते समय वहाँ के भिखमंगों को देखा। उस भिखमंगे से वह बहुत ही आकर्षित हुआ, जो अपने को जन्म से अंधा कहकर भीख माँग रहा था। अन्य भिखमंगों से अधिक छुट्टे पैसे उसके कपड़े पर फैले हुए थे। युवक ने देखा कि बीच-बीच में वह उन छुट्टे पैसों को हाथ में ले रहा है और उन्हें ग़ौर से देखने के बाद डिब्बे में डाल रहा है।

युवक को लगा कि वह सचमुच अंधा नहीं है। इतने में अंधे भिखारी ने चिल्लाया "बाबा, दान दीजिये।"

"दान दूँगा अवश्य, किन्तु मुझे तुम्हारे अंधे होने पर संदेह हो रहा है।" युवक ने उस भिखमंगे से कहा।

भिखारी ने तुरंत कहा "साहब, दूर दिखायी देनेवाले उस हरे रंग का महल देख रहे हैं ना? उससे थोड़ी दूरी पर बबूल के पेड़ों के बगल में नारियल का जो पेड़ है, वह भी आपको दिखायी दे रहा है ना?"

"हाँ, दिखायी दे रहा है" युवक ने कहा।

"देखा, इस अंधे में और आपमें कितना फरक़ है। वह पेड़ मुझे दिखायी नहीं दे रहा है।" भिखारी ने कहा।

- सुमित्रा चौहान

सम्राट अशोक

८
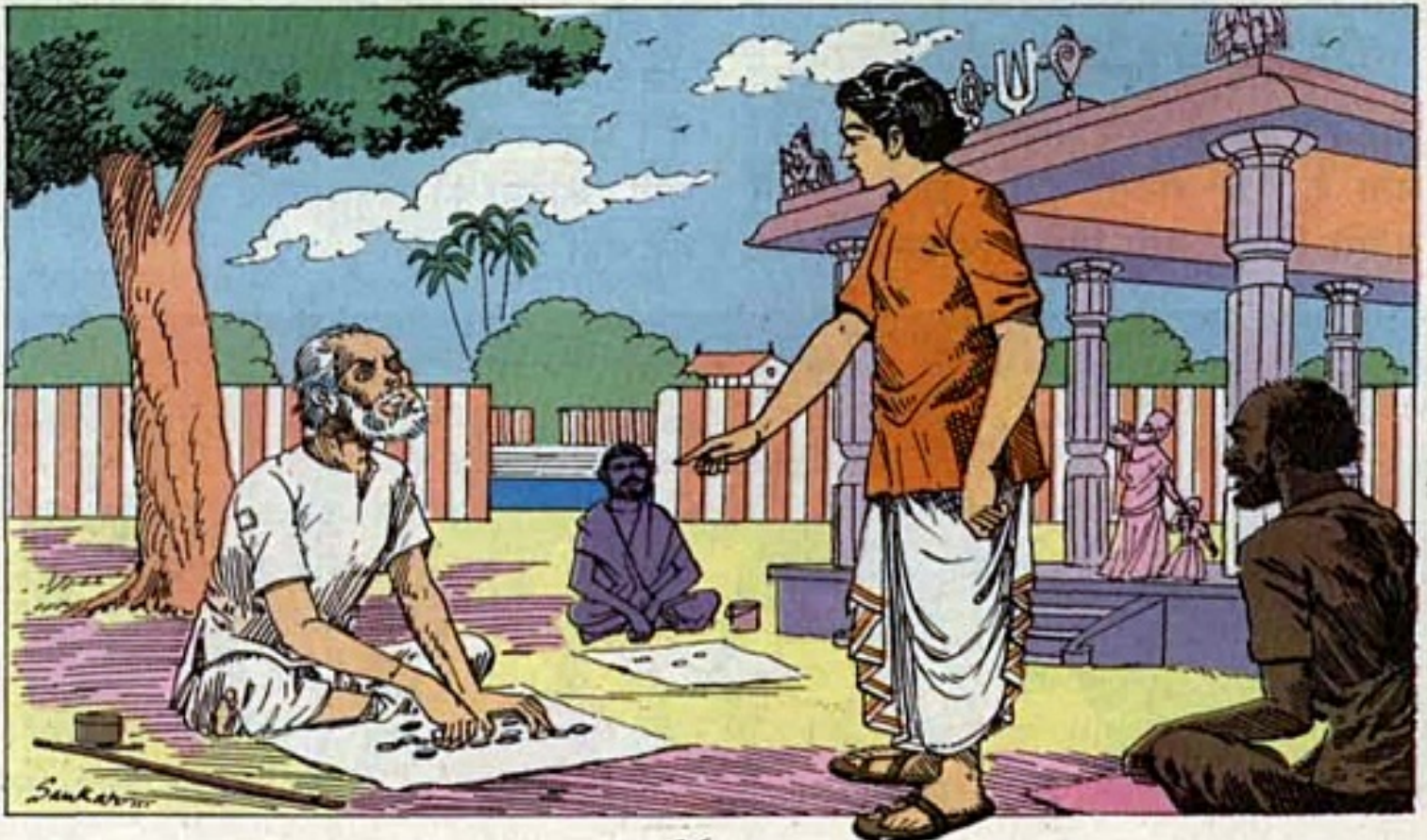
(मगध का सम्राट वृद्ध बिंदुसार जब अस्वस्थ था, तब तक्षशिला में विद्रोह प्रारंभ हुआ। विद्रोह को कुचल डालने के लिए सम्राट के ज्येष्ठ पुत्र सुमेश ने विमुखता दिखायी। कनिष्ठ पुत्र अशोक पिता का आशीर्वाद पाकर सेना सहित तक्षशिला गया। एक ही दिन में उसने विद्रोह को कुचल डाला। विद्रोहियों पर थोड़ी भी दया न दिखाते हुए उसने उन्हें मृत्यु-दंड दिया।)

वह शाम का समय था। महाराज बिंदुसार का ज्येष्ठ पुत्र सुमेश अपने भाइयों को लेकर वन में विहार करने निकला। राजधानी पाटलीपुत्र के समीप प्रवाहित होती हुई नदी के तट पर स्थित उपवन में पहुँचे। वहाँ पहुँचने के पहले ही उनके सेवकों ने उनके लिए आवश्यक भोजन पदार्थ, पेय, फल आदि का प्रबंध किया। जैसे ही राजकुमारों ने उपवन में प्रवेश किया, उन्होंने अंगरक्षकों को जगह-जगह पर तैनात किया, जिससे कोई अंदर आ न सके। वे नहीं चाहते थे कि कोई उनके विनोद-कार्यक्रम में विघ्न डाले। ख़ासकर सुमेश नहीं चाहता था कि आम जनता को यह बात मालूम हो। क्योंकि उसे डर था कि यह जानने पर जनता उन्हें विलास-प्रिय कहेगी और कहेगी कि वे बिन्दुसार जैसे योग्य महाराज के अयोग्य पुत्र हैं। उन्होंने तरह-तरह के रुचिकर आहार पदार्थ खाये, फलों का रस पिया और उपवन
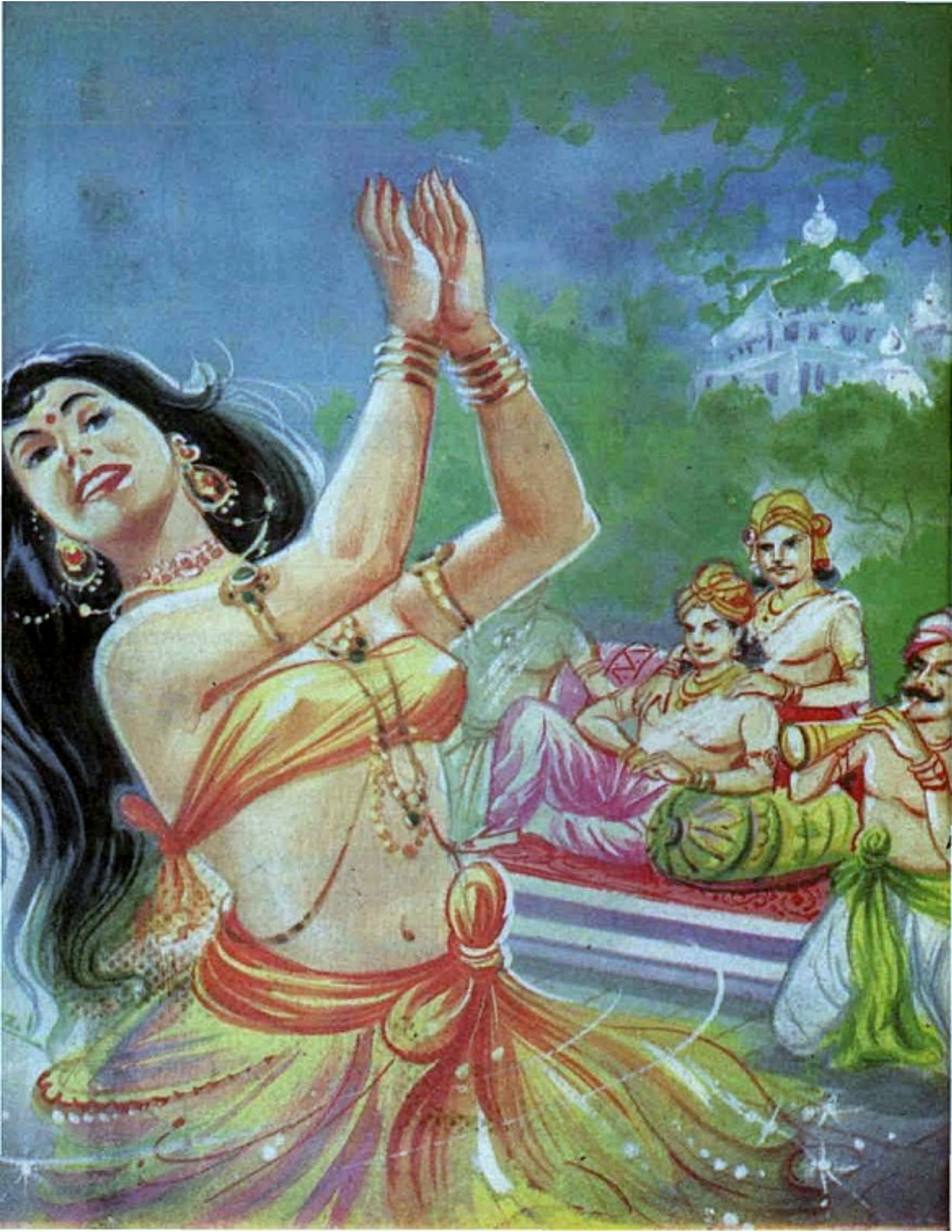
के बीचों बीच फैलाये हुए कालीन पर बैठ गये। थोड़ी ही देर में सुंदर कन्याएँ नाचने-गाने लगीं।

सुशेम नृत्य का मज़ा लूट रहा था। उसके हाव-भावों से स्पष्ट था कि ऐसे कार्यक्रमों में उसकी पर्याप्त अभिरुचि है। थोड़ी देर बाद उसने कोई आवाज़ सुनी। उसने पीछे मुड़कर देखा कि एक अंगरक्षक बेतहाशा दौड़े आ रहा है। उसने पास आकर नमस्कार करते हुए कहा "प्रभू, हमारा एक दलनायक अपने सैनिकों के साथ इस उपवन में प्रवेश करना चाहता है। मैंने उससे कहा भी कि आज आपकी आज्ञा के बिना कोई भी अंदर नहीं आ सकता। किन्तु वह मेरी बात सुनने से इनकार कर रहा है और अंदर प्रवेश करने के लिए राजमुद्रिका दिखा रहा है।"

"दलनायक को यहाँ क्या काम?" सुशेम ने असहनशील हो प्रश्न किया। "कारण बताना नहीं चाहता। शायद आपसे कहे।" अंगरक्षक ने कहा। "ठीक है, उसे जल्दी बुलाओ" चिढ़ते हुए सुशेम ने कहा।

अंगरक्षक लौटा और थोड़ी ही देर में दलनायक को अपने साथ ले आया। दलनायक ने सुशेम को नमस्कार किया। सुशेम ने इशारे से अंगरक्षक को वहाँ से चले जाने के लिए कहा। फिर दलनायक को नाराज़ी से देखते हुए पूछा "हमारे विनोद-कार्यक्रम में क्यों रुकावट डाली? तुम्हारी इतनी हिम्मत।"

"हम रुकावट डालनेवाले कौन होते हैं प्रभू। यह हमारा उद्देश्य भी नहीं हैं" दलनायक ने विनयपूर्वक कहा।
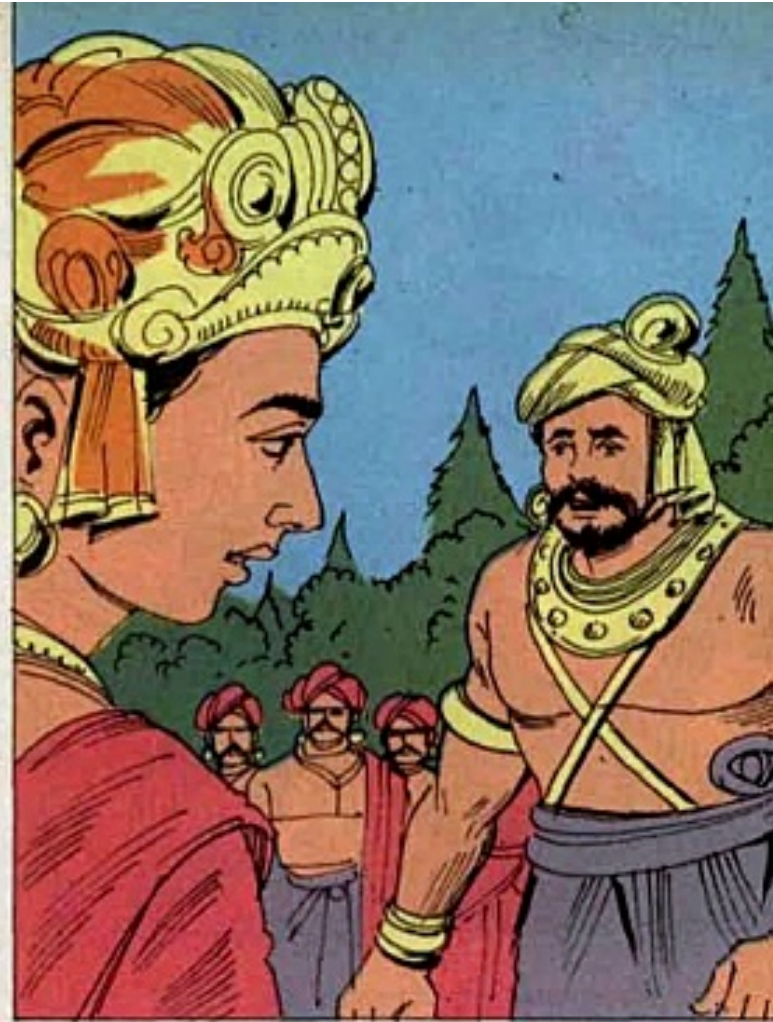
सुशेम ने चिल्लाते हुए पूछा "फिर तुम यहाँ क्यों आये?"

"कल शाम को इस उपवन में बहुत ही बड़े पैमाने पर अभिनंदन-समारोह संपन्न होनेवाला है। सेनाधिपति की आज्ञा है कि इसके लिए आवश्यक प्रबंध मैं करूँ। उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए मेरे साथ आये कुछ सैनिक उपवन के बाहर खड़े हैं। आपकी अनुमति हो तो, अंदर बुला लाऊँगा।" दलनायक ने कहा। "बड़े पैमाने पर अभिनंदन-समारोह संपन्न होनेवाला है? किसका अभिनंदन होनेवाला है?" सुशेम ने पूछा।

"युवराज अशोक का" दलनायक ने कहा।

"किस बात पर अशोक का अभिनंदन होनेवाला है?" सुशेम ने पूछा।

"प्रभू, युवराज अशोक ने तक्षशिला में विद्रोह को कुचल ड़ाला। एक ही दिन में उन्होने यह महान कार्य कर दिखाया। वे विजयी होकर लौट रहे हैं। उनके स्वागत की सब तैयारियाँ हो रही हैं" दलनायक ने कहा। यह बात सुनते ही सुशेम का चेहरा फीका पड़ गया। उसके भाइयों को लगा, मानों उनपर बिजली गिरी हो। किसी के मुँह से बात ही निकल नहीं रही थी। सब के सब अवाक् रह गये। एक नर्तकी ने कहा "वाह, कैसी खुशखबरी सुनायी।"

सुशेम ज़ोर से चिल्ला पड़ा "बंद करो बकवास।"

वे नर्तकियाँ पहले से ही जानती थीं कि सुशेम, अशोक से ईर्ष्या करता है, इसलिए उन्होंने उसकी बातों की कोई परवाह नहीं की। वे मन ही मन सुशेम की अशक्तता पर हँसती रहीं।

स्तब्ध सुशेम ने थोड़ी देर बाद मौन-भंग करते हुए पूछा "अब तक यह बात मुझसे क्यों छिपायी गयी? क्या जान-बूझकर यह बात मुझसे छिपायी गयी?"

"यह शुभ समाचार पाते ही महाराज चाहते थे कि आपको भी यह बात बतायी जाए। परंतु किसी को मालूम नहीं था कि आप कहाँ हैं। इसी कारण यह समाचार आप तक पहुँचाया जा नहीं सका" दलनायक ने कहा।

क्रोध से काँपते हुए सुशेम चिल्ला पड़ा "चुप हो जा।"

"आपने कारण पूछा तो मैंने कारण बताया। क्षमा कीजिये प्रभू" दलनायक ने कहा।

"हम सब जानते हैं। तुम मुँह बंद रखो।" कहता हुआ सुशेम उस बंदर की तरह अशांत होकर इधर-उधर घूमने लगा, जिसने आग पर भूल से पैर रख दिया हो। फिर उसने अपनी मुट्ठी बंद की और आकाश की ओर देखने लगा। वह सोच भी नहीं सकता था कि इतनी सुगमता से अशोक अपना लक्ष्य साधेगा। वह चाहता था कि अशोक इस अभियान में असफल हो। पर इस विजय के कारण निश्चित ही महाराज व जनता की दृष्टि में उसका आदर बढ़ेगा और वह वीर व नायक कहलाया जायेगा। उसने खूब सोचा और सिर झुकाकर दलनायक के पास आया। दलनायक की समझ में नहीं आ रहा था कि क्या किया जाए।

सुशेम ने अकस्मात् हीरे की अपनी अंगूठी निकाली और उसे दलनायक की उँगली में पहना दी। फिर हँसते हुए दलनायक की पीठ थपथपायी। इस आकस्मिक परिणाम पर दलनायक स्तंभित रह गया। उसने धीरे से हँसते हुए झुककर सुशेम को नमस्कार किया।

"तुम शुभ समाचार ले आये। इसी बात पर तुम्हें यह पुरस्कार दिया। कल तुम्हें इससे भी बड़ा पुरस्कार दूँगा।" सुशेम ने कहा।

"कृतज्ञ हूँ, महाप्रभू" हाथ जोड़ते हुए दलनायक ने कहा। "अगर तुम उस बड़े पुरस्कार को पाना चाहते हो तो तुम्हें एक काम करना होगा" सुशेम ने भावगर्भित शैली में कहा।

दलनायक ने कहा "आज्ञा दीजिये।"

"वह क्या है, बाद बताऊँगा। पहले यह बताओ कि मैं कौन हूँ" सुशेम ने पूछा।

"कैसी बातें कर रहे है आप। आप तो युवराज हैं" दलनायक ने कहा।

"आज मैं युवराज हूँ तो भविष्य में मैं इस राज्य का क्या बनूँगा?" सुशेम ने पूछा।

"आप महाराज बनेंगे प्रभू" दलनायक ने कहा।

"शाबाश, सही बताया तुमने। होनेवाले महाराज का साथ दोगे तो तुम्हारा भविष्य सुनहला होगा" सुशेम ने कहा।

"आज्ञा दीजिये प्रभू, आपकी आज्ञा का पालन करूँगा" दलनायक ने कहा। "अशोक के अभिनंदन-समारोह के सब प्रबंध तुम्हारे ही अधीन हो रहे हैं। ये प्रबंध उच्च स्तर पर हों और अद्भुत रूप से हों। यह समारोह इतने उच्च स्तर पर हो कि उस परिचारिका के पुत्र के लिए किसी और सम्मान की ज़रूरत ही न पडे। समारोह के प्रबंध बड़ी ही मुस्तैदी से हों। मेरी बात समझ गये?" सुशेम ने पूछा।

इन बातों को सुनते ही दलनायक की भौंहें सिकुड गयीं। सुशेम ने बड़े ही प्यार से उसके हाथ पकड़ लिये और कहा "कायर की तरह भयभीत क्यों हो रहे हो? दलनायक हो। सेनाधिपति बनना चाहते हो तो मेरी बातें ग़ौर से सुनो। सविस्तार बताऊँगा कि तुम्हें क्या करना होगा। मेरे साथ आओ" कहकर वह उसे झाडियों के पीछे ले गया।

दूसरे दिन सायंकाल को अशोक का अभिनंदन करने के लिए बहुत ही प्रमुख व्यक्ति उपवन में इकट्ठे हुए। उनमें से मगध का प्रधान मंत्री, मंत्रिगण, सेनाधिपति, दल-नायक, अधिकारी, पुरप्रमुख, राज-परिवार के सुशेम और उसके भाई सबके सब वहाँ उपस्थित थे।

सूर्यास्त होने जा रहा था, फिर भी अशोक वहाँ नहीं आया। प्रधान मंत्री ने सेनाधिपति से पूछा "हमारे युवराज के पहुँचने में इतना विलंब क्यों हुआ?"

"उन्हें सूर्यास्त के पूर्व ही यहाँ पहुँचना था। कोई अनिवार्य कारण होगा" सेनाधिपति ने कहा।

इतने में एक घुड़सवार दूत वहाँ पहुँचा। सबको नमस्कार किया और प्रधान मंत्री से कहा "मार्ग-मध्य में विक्षुपुर की प्रजा ने युवराज को रोका और उनका स्वागत-सत्कार किया। उनसे निपटकर आने में घंटा लग गया। देरी का यही कारण है। सेना-सहित युवराज जल्दी ही पहुँचनेवाले हैं।"

पास ही खड़े अपने मित्र को देखते हुए सुशेम ने अर्थगर्भित मुस्कान भरी। सुशेम की योजना के अनुसार ही, स्वागत के नाम पर अशोक की यात्रा में जान-बूझकर विलंब करवाया गया, विघ्न ड़ाला गया। यह बात केवल सुशेम और उसके विश्वासपात्र व्यक्तियों को ही मालूम थी। उनकी योजना थी कि अंधेरा छा जाने के बाद ही अशोक उपवन में प्रवेश करे।

उपवन पहुँचने के मार्ग में एक तरफ़ ऊँचा टीला था। नदी में जब बाढ़ आती थी तो पानी बहकर भू-भाग को डुबो न दो, इसके लिए पूरे नदी-तट पर पहाड़ी पथ्थरों से ऊँचा बाँध बाँधा गया। इसका निर्माण बहुत पहले हुआ। कहीं-कहीं पथ्थर छूट गये और बाँध में ढिलाई आ गयी।

सूर्यास्त हो गया और अंधेरा चारों दिशाओं में व्याप्त होने लगा। वहाँ के बड़े-बड़े स्तंभों पर सैनिकों ने जलती मशालें रखीं। उस समय

दूर से घोड़ों के टापों की आवाज़ें सुनायी देने लगी। नारे सुनायी पड़ने लगे "मौर्य चक्रवर्ती बिंदुसार की जय।"

उपवन में उपस्थित सब लोग उमड़ते हुए उत्साह से चली आती सेना को देखने लगे। जैसे ही सेनाएँ दिखायी पडीं, ज़ोरे-ज़ोर से नारे लगाने लगे "वीराधिवीर युवराज अशोक की जय। युवराज अशोक की जय।" नारों से वह स्थल गूँज उठा।

सुशेम और उसके अनुचार उद्विग्न थे। उनकी परेशानी बढ़ती जा रही थी। प्रधान मंत्री महाराज की तरफ़ से अशोक को पुष्प-माला पहनाने के लिए हाथ में पुष्प-माला लिये खड़ा था।

अशोक की सेना बाँध से होती हुई उपवन पहुँचने के मार्ग पर आ चुकी। वहाँ उपस्थित जनता हर्ष-विभोर थी। उनका आनंद वर्णनातीत था।

चली आती हुई सेना के बीच हठात् खलबली मच गयी। एक बहुत बड़ा धमाका हुआ और साथ ही हाहाकार भी मच गया। उस अंधेरे में कुछ भी दिखायी नहीं दे रहा था। पीड़ा से भरी कराहें चारों दिशाओं में प्रतिध्वनित होने लगीं।

"क्या हुआ? मेरा भ्राता अशोक कुशल ही है ना?" सुशेम चिल्लाता हुआ बोला। किसी ने भी उसके प्रश्न का उत्तर नहीं दिया। वे दे न सके। कुछ सिपाही हाथों में मशालें लिये आगे दौड़े। तब तक बड़े-बड़े पथ्थर ऊपर से लुढ़कते हुए सेना पर आ गिरे और उन्हें पीस डाला। बाक़ी सैनिक भयभीत हो गये और हाहाकार मचाते हुए इधर-उधर भागने लग गये।

प्रधान मंत्री और सेनाधिपति अशोक को ढूँढने लगे और चिल्लाने लगे "अशोक, तुम कहाँ हो? युवराज, तुम कहाँ हो?"

थोड़ी देर बाद अशोक प्रकट हुआ और गंभीर स्वर में कहा "मैं सकुशल हूँ। पहले जो मैं कहता हूँ, कीजियेगा। पथ्थरों के नीचे गिरे जो सैनिक घायल हो गये, उन्हें सावधानी से बाहर निकालियेगा। बाँध के ऊपर से जिन बदमाशों ने सैनिकों पर पथ्थर लुढ़काये, उनका पीछा कीजिये और उन्हें पकड़िये। यह स्पष्ट है कि हमारा नाश करने पर तुले व्यक्तियों का क्या उद्देश्य है। अब हमें जानना यह है कि इस षड्यंत्र के पीछे किनका हाथ है।" **-सशेष**

दीवान में नौकरी

सूरज लौकिक व होशियार माना जाता था। एक बार उसकी बेटी की शादी के लिए उसे धन की आवश्यकता पड़ी। गाँव के महाजन मिश्रीलाल से कर्ज़ माँगा तो उसने इनकार कर दिया।

इस घटना के दस दिन बाद दीवान में एक नौकरी खाली हुई। जिसे यह नौकरी दी जायेगी, उसे दिवान के कामों में उसकी सहायता करनी होगी। बहुत-से युवकों में इस नौकरी को पाने के लिए होड़ लगी हुई थी। इन युवकों में से केवल दो ही समान योग्य साबित हुए।

दिवान ने उन दोनों को यह कहकर भेज दिया कि एक सप्ताह में उन्हें सूचित किया जाएगा। जो चुना जायेगा, उसे नौकरी पर रख लिया जाएगा। उन दोनों में से एक महाजन मिश्रीलाल का बेटा था।

इस विषय को जानकर सूरज, मिश्रीलाल से मिला और कहा ''मालूम हुआ कि तुम्हारा बेटा दीवान में नौकरी पाने की कोशिशों में लगा हुआ है। दिवान माधव और मैंने एक ही गुरु से शिक्षा पायी। हम दोनों जिगरी दोस्त हैं। भाग्यवश वह दिवान बना और मैं एक मामूली किसान। मुझे तीन हज़ार अशर्फ़ियाँ दो। यह मत समझना कि मैं बख्शीश माँग रहा हूँ। मैं यथाशक्ति प्रयत्न करूँगा और तुम्हारे बेटे को नौकरी दिलाऊँगा। अगर मैं इस प्रयत्न में सफल नहीं हुआ तो तुम्हारी रकम तुम्हें लौटा दूँगा।''

महाजन मिश्रीलाल ने चुपचाप सूरज को तीन हज़ार अशर्फ़ियाँ दीं। एक हफ़्ते के बाद मिश्रीलाल के बेटे को दीवान में नौकरी मिली। सूरज की पत्नी को जब यह बात मालूम हुई तो उसने अपने पति को दोषी ठहराते हुए कहा ''आपने कभी भी मुझसे इस बात का ज़िक्र ही नहीं किया कि आप दिवान के अच्छे मित्र हैं। आपने मुझसे यह सच्चाई क्यों छिपायी?''

इसपर सूरज हँस पड़ा और बोला ''सच कहा जाए तो दिवान और मैं दोस्त ही नहीं। मैं न ही उनसे मिला और न ही उनसे कहा कि महाजन मिश्रीलाल के बेटे को नौकरी दो। संयोगवश उसे वह नौकरी मिल गयी। पर जो हुआ, अच्छा ही हुआ। हमारी ज़रूरत पूरी हो गयी। किसी दिन यह सत्य महाजन को बता दूँगा और ब्याज-सहित रकम दे दूँगा।''

-अक्षय

सुनयना

धुन का पक्का विक्रमार्क पुनः पेड़ के पास गया। पेड़ से शव को उतारा और अपने कंधे पर ड़ाल लिया। यथावत् मौन श्मशान की तरफ़ बढ़ता गया। तब शव के अंदर के बेताल ने कहा "राजन्, मैं तो तुम्हें समझाते-समझाते थक गया। आख़िर ऐसी क्या ज़रूरत आ पड़ी जिसे पूरी करने के लिए तुम इतने कष्ट झेल रहे हो। यह भी भूल गये कि इस भयंकर श्मशान में पिशाच हैं, विषसर्प हैं। किसी भी क्षण तुम्हारी जान को ख़तरा हो सकता है। तुम कोई साधारण मनुष्य नहीं हो, जिसके मर जाने पर क्षणिक दुख होगा और फिर भुला दिया जाएगा। मुझे तुम्हारे हठीले स्वभाव व कष्टों से जूझने की प्रवृत्ति को देखकर शंका हो रही है कि कहीं तुम शापग्रस्त तो नहीं हो। मेरी राय में शापग्रस्त होने के कारण ही तुम विवश हो गये और मज़बूरन यंत्र की तरह ये काम किये जा रहे हो। मानव जान-बूझकर

बैताल कथा

या अनजाने में पाप कर बैठते हैं। कभी-कभी देवताओं अथवा तपोधनियों के प्रति दुर्व्यवहार करते हैं। अहंकार-पूरित होकर अपचार करते हैं। इस कारण वे शापग्रस्त होते हैं। मैं जानता तो नहीं कि तुम भी इसी श्रेणी के हो या नहीं। भविष्य में तुम सावधान रह सको, इसके लिए मैं सुनयना नामक एक राजकुमारी की कहानी सुनाऊँगा।'' फिर बेताल सुनयना की कहानी यों सुनाने लगा।

विनयपुरी के राजा का विवाह संपन्न हुए सोलह साल बीत गये, फिर भी उनकी संतान नहीं हुई। कोई ऐसा पुण्यक्षेत्र नहीं, जहाँ दंपति न गये हों, कोई ऐसा भगवान नहीं, जिसकी उन्होने पूजा न की हो।

एक बार वर्षाकाल में आधी रात को बिजली ज़ोर से कडकी और मूसलधार बारिश होने लगी। सबने भयंकर ध्वनि सुनी। उन्हें लगा कि नगर के बाहर का पहाड़ टूट गया।

उस ध्वनि से रानी चौंककर शय्या से उठ खड़ी हो गयी। थोड़ी देर बाद वर्षा थम गयी और वातावरण एकदम शांत हो गया। रानी फिर से शय्या पर लेट गयी और निद्रा की गोद में चली गयी। उसने तब एक सपना देखा। सपने में उसने सर्वांगभूषित दुर्गादेवी को देखा। देवी ने रानी से कहा ''बहुत ही समय से पथ्थरों व वृक्षों से ढका हुआ मेरा मंदिर भारी वर्षा के कारण उभर आया है। शिथिल स्थिति में पड़े उस मंदिर का पुनरुद्धार करावो। तुम्हारी भलाई होगी'' कहकर अंतर्धान हो गयी।

रानी ने सबेरे ही राजा को अपने सपने के बारे में बताया। उसी दिन शाम को राजा, रानी तथा परिवार के कुछ सदस्य बड़ी मुश्किल से उस पर्वत पर पहुँचे। वहाँ शिथिल दुर्गा का मंदिर देखकर आश्चर्य में डूब गये। राजा के आज्ञानुसार छे महीनों में उजड़े मंदिर का पुनरुद्धार हुआ। पर्वत पर जाने के लिए अब रास्ता भी खुल गया।

जिस दिन दुर्गादेवी की पूजाएँ प्रारंभ हुई, उसी दिन मालूम हुआ कि रानी गर्भवती है। राजदंपति के आनंद की सीमाएँ न रहीं। रानी ने मनौती मानी थी कि वह विशिष्ट प्रकार की चाँदी की आँखें बनवायेगी और स्वयं वह देवी का अलंकार करेगी। चूँकि वह गर्भवती थी, इसलिए उसे पर्वत पर चढ़ने से मना कर दिया गया। इस स्थिति में उसका पर्वत पर चढ़ना अनुचित बताया गया। इसलिए रानी को यह प्रयत्न छोड़ना पड़ा।

क्रमश: नौ मास के बाद रानी ने एक सुँदर

कन्या को जन्म दिया । अति आकर्षित करनेवाली बड़ी-बड़ी आँखों की वह बच्ची बड़ी ही मनोमुग्धकारी लगती थी । लगता था, उस बच्ची को देखने के लिए दो आँखें पर्याप्त नहीं हैं ।

पंडितों ने उसके सुंदर नयनों को देखकर कहा "इसका सुनयना नाम सार्थक होगा ।"

बच्ची के जन्म के दूसरे ही दिन राजवैद्यों ने स्पष्ट कह दिया कि इतने सुंदर नयनों के होते हुए भी वह जन्म से ही अंधी है, कुछ भी देख नहीं सकती । यह अशुभ समाचार सुनकर राजदंपतिं बहुत ही दुखी हुए ।

यद्यपि सुनयना अंधी थी, पर थी बड़ी ही अक़्लमंद । मधुर कंठस्वर उसकी अपनी संपदा थी । फिर भी माता-पिता उसके अंधेपन को लेकर चिंताग्रस्त रहते थे ।

यों काल बीतता गया । सुनयना अब विवाह के योग्य आयु की हो गयी । चाहे वह सौंदर्य राशि क्यों न हो, पर भला देखते-देखते कोई राजकुमार किसी अंधी युवती से क्यों शादी करने आगे बढ़ेगा । इसी को लेकर राजदंपति मन ही मन तीव्र रूप से दुखी थे ।

"मेरे विवाह को लेकर आप व्यथित मत होइये । पूरा भार दुर्गादेवी पर छोड़ दीजिये ।" कहकर सुनयना अपने माता-पिता को ढाढ़स बंधाती थी ।

वह हर दिन शाम को अपनी प्रिय सहेली के साथ पर्वत पर चढ़कर दुर्गादेवी के मंदिर जाती रहती थी । पुजारी से प्रसाद लेने के बाद वह हर दिन मंदिर के पीछे के चट्टान पर बैठती थी और ठंडी हवा का मज़ा लूटती थी ।

एक दिन प्रसाद लेने के बाद वह यथावत् मंदिर के पीछे आयी । उसकी सहेली ने उसे एक पथ्थर पर बिठाया और कहा "सखी, अपने मधुर स्वर में दो-तीन गीत सुनाना ।"

देवी की स्तुति में सुनयना ने गीत गाना शुरु किया । तब उसकी सहेली वहाँ से चुपके से चली गयी । आलय में काम करनेवाले युवक शिल्पकार से सहेली का विवाह बहुत ही जल्दी संपन्न होनेवाला है । वह उससे मिलने गयी । शिव को प्रिय लगनेवाले नंदिवर्धन तथा चमेली पुष्पों की सुगंधि व्याप्त हो रही थी । उस सुगंधि से भरी ठंडी हवा के झोंकों से सुनयना अपने आपको भूल गयी और तन्मय होकर गाने लगी ।

चंद्रगिरि का युवराज सुधाकर देश में पर्यटन करते हुए, पहाड के पिछले भाग से ऊपर आया और वहाँ पहुँचा, जहाँ सुनयना बैठकर गा रही थी । वह उत्तम चित्रकार था । पिता

इस घटना के बाद सुधाकर अपना राज्य लौटा। उस रात को उसके पिता कांतिवर्मा ने उसके पर्यटन की विशेषताएँ उससे पूछकर जानीं और कहा "पुत्र, एक शुभ समाचार। हमारे चक्रवर्ती की इकलौती बेटी कांचना तुमसे विवाह करना चाहती है। तुम्हारा अभिप्राय जानने के लिए चक्रवर्ती ने दूतों को भेजा। हम उनके सामंत राजा हैं। उनसे संबंध जोड़ना हमारा सौभाग्य है। भाग्य हमारा दरवाज़ा खटखटा रहा है।"

चक्रवर्ती ने एक साल के पहले ही सुना था कि सुधाकर उत्तम चित्रकार है। उसने उसे अपने यहाँ बुलाया और पंद्रह दिनों तक अंत:पुर में ही रहने दिया। अपने परिवार के सदस्यों के चित्र उससे खिंचवाये। तब युवरानी कांचना का परिचय सुधाकर से हुआ।

की अनुमति पाकर उसने कितने ही राज्यों में पर्यटन किया और कितने ही सुंदर प्रदेशों और व्यक्तियों के चित्र खींचे। सुनयना के अद्भुत सौंदर्य ने उसे हतप्रभ कर दिया। बिना पलक मारे वह उसे देखता ही रह गया। ऐसी अद्भुत सुँदरी को आज तक उसने सपने में भी नहीं देखा। सुधाकर ने वहीं का वहीं मग्न होकर गाती हुई सुनयना का चित्रांकन किया। चित्र के पूरे होते-होते उसकी सहेली भी लौटी। उसने आते ही कहा "अंधेरा छा रहा है, चलिये युवरानी।"

सुधाकर नहीं चाहता था कि सहेली उसे देखे। वह एक पथ्थर के पीछे छिप गया। उसने जान लिया कि वह युवती इस राज्य की युवरानी है। उसने दृढ़ निश्चय कर लिया कि शादी करूँगा तो इसी युवती से करूँगा।

कांचना आवश्यकता से अधिक मोटी है। साथ ही उसका एक पैर सुन्न है। तुनकमिज़ाज की है। सुधाकर ने उसके स्वरूप का स्मरण करते हुए पिता से कहा "उस मोटी और लंगडी से मेरा विवाह। असंभव।"

राजा बेटे के जवाब पर नाराज़ होकर बोला "क्या तुम अपने को कामदेव समझते हो? तुम भी तो कुबड़े और तिरछी आँख के हो।"

स्वयं पिता ही जब उसके रूप पर मज़ाक कर रहे थे, सुधाकर दुख से बिलख उठा। कहा "क्षमा कीजिये पिताश्री। मैंने एक और युवती को चाहा है। वह विनयपुर की राजकुमारी है।" कहकर उसने सुनयना का चित्र राजा को दिखाया। सुनयना का सौंदर्य देखकर कांतिवर्मा सन्न रह गया। थोड़ी देर तक मौन रहने के बाद बोला "मेरी बातों का बुरा न

मानना। चक्रवर्ती के प्रस्ताव को हम अस्वीकार कर देंगे तो हो सकता है, भविष्य में इसके परिणाम बुरे व तीव्र हों। हम उनके सामंत राजा हैं। हो सकता है, राज्य ही हमसे छिन जाए।''

कांतिवर्मा अपने बेटे के हठी स्वभाव से अच्छी तरह परिचित था। सुनयना और उसके पिता के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए उसने अपने गुप्तचरों को विनयनगर भेजा। वे एक सप्ताह बाद लौटे और कहा कि सुनयना जन्म से ही अंधी है।

यह समाचार जानते ही कांतिवर्मा अपने पुत्र के कक्ष में गया और उससे पूछा ''पुत्र, तुमने उस सुनयना से बात नहीं की। उसका चित्र मात्र खींचा। है ना?'' सुधाकर ने 'हाँ' के भाव में सिर हिलाया। तब कांतिवर्मा ने कहा ''इसमें कोई शक नहीं कि राजकुमारी अद्‌भुत सुँदरी है। किन्तु बेचारी वह जन्म से ही अंधी है।'' सहानुभूति दिखाते हुए उसने कहा।

सुधाकर क्षण भर के लिए हक्का-बक्का रह गया। पिता की बातों पर उसे विश्वास नहीं हुआ। वह बराबर चित्र में चित्रित सुनयना की आँखें देखता रहा। फिर उसने कहा ''तब तो और भी अच्छा है। सुनयना से ही मेरा विवाह होगा।''

कांतिवर्मा ने कहा ''ठीक है। तुम्हारा विवाह शीघ्र ही सुनयना से ही संपन्न होगा।'' कहकर उसने पुत्र को आशीर्वाद दिया और अपने भवन की ओर चला गया।

बेताल ने विक्रमार्क को यह कहानी सुनायी और कहा ''राजन्, कांतिवर्मा का भय था कि अगर सुधाकर का विवाह चक्रवर्ती की पुत्री से नहीं होगा तो अनर्थ होगा। जब उसे मालूम हुआ कि सुनयना जन्म से अंधी है तो उसे ऐसा करने से बेटे को मना करना था, अपनी असहमति जतानी थी, परंतु उल्टे उसने अपने पुत्र को आशीर्वाद दिया। क्या यह विचित्र नहीं लगता? मेरा एक और संदेह है। यह सुनने के बाद कि सुनयना जन्म से अंधी है, सुधाकर ने क्यों कहा कि यह तो और भी अच्छा है। उसका ऐसा कहना भी असंबद्ध लगता है। उसे तो इस बात पर चिंता होनी चाहिये कि जिस युवती से वह शादी करना चाहता है, वह विकलांग है, परंतु लगता है कि वह बहुत ही आनंदित है। ठीक है, थोड़ी देर के लिए हम दोनों ये बातें भुला दें। सुनयना का जन्म से ही अंधी होकर पैदा होना, चक्रवती की इकलौती पुत्री से विवाह करने के सदवकाश

को सुधाकर का हाथ से जाने देना, उनके दुर्भाग्य के द्योतक लग रहे हैं। लगता है वे दोनों शापग्रस्त हैं। मेरे इन संदेहों के समाधान जानते हुए भी चुप रहोगे तो तुम्हारे सिर के टुकड़े-टुकड़े हो जाएँगे।''

विक्रमार्क ने उसके संदेहों को दूर करते हुए कहा ''राजा कांतिवर्मा ने पहले सुधाकर के सुनयना से विवाह के प्रस्ताव को ठुकराया। अपनी आपत्ति जतायी। फिर उसे आशीर्वाद दिया। इसमें मुझे आश्चर्य में डालनेवाली कोई बात नहीं दीखती। उसकी बातों से स्पष्ट है कि उसके बेटे ने चक्रवर्ती की पुत्री से विवाह करने से इनकार कर दिया और वह इस बात पर डरा कि ऐसा करने से भविष्य में उसे राज्य खोना पड़ेगा और चक्रवर्ती के क्रोध का शिकार होना पड़ेगा। किन्तु उसे इसका विश्वास था कि जब चक्रवर्ती को मालूम होगा कि सामंत राजा का बेटा जन्म से अंधी एक युवती से विवाह करने सन्नद्ध है, तो वे सुधाकर की त्यागबुद्धि पर हर्षित होंगे और इस विवाह की स्वीकृति देंगे। अपनी पुत्री से विवाह न करने पर वे क्रोधित नहीं होंगे। उत्तम युवक चित्रकार ने जब चक्रवर्ती जैसी हस्ती की पुत्री से ही विवाह करने से इनकार कर दिया तो वह उस युवक के औन्नत्य को तथा उसकी मानसिक परिपक्वता को दर्शाता है। फिर अब रही सुधाकर की बात। जब सुधाकर को पिता द्वारा मालूम हुआ कि सुनयना जन्म से अंधी है तो उसने कहा कि यह तो और अच्छा है। ऐसा कहने के पीछे सबल कारण है। वह उत्तम चित्रकार हो सकता है किन्तु रूपवान नहीं है। कुबड़ा है, आँख तिरछी है। अगर सुनयना अंधी नहीं होती तो हो सकता है, वह हृदयपूर्वक उसे नहीं चाहे और विवाह संभव न हो पाये। अब प्रश्न यह है कि क्या सुधाकर और सुनयना शापग्रस्त हैं? मेरी दृष्टि में यह प्रश्न युक्तियुक्त नहीं है। संसार में कितने ही लोग सुखपूर्वक जीवन बिताते हैं, तो कितने ही लोग दुखों से भरा जीवन-यापन करते हैं। इस वजह से कुछ लोगों को धन्य, भाग्यवान व भगवान से आशीर्वाद प्राप्त और जिन्हें ये प्राप्त नहीं, उन्हें भाग्यहीन व शापग्रस्त मानना अनुचित है। यह हमारी मंद बुद्धि का द्योतक है।''

राजा के मौन-भंग में सफल बेताल शव को लेकर अदृश्य हो गया और पेड़ पर जा बैठा।

आधार - गोपाल पांडे की रचना
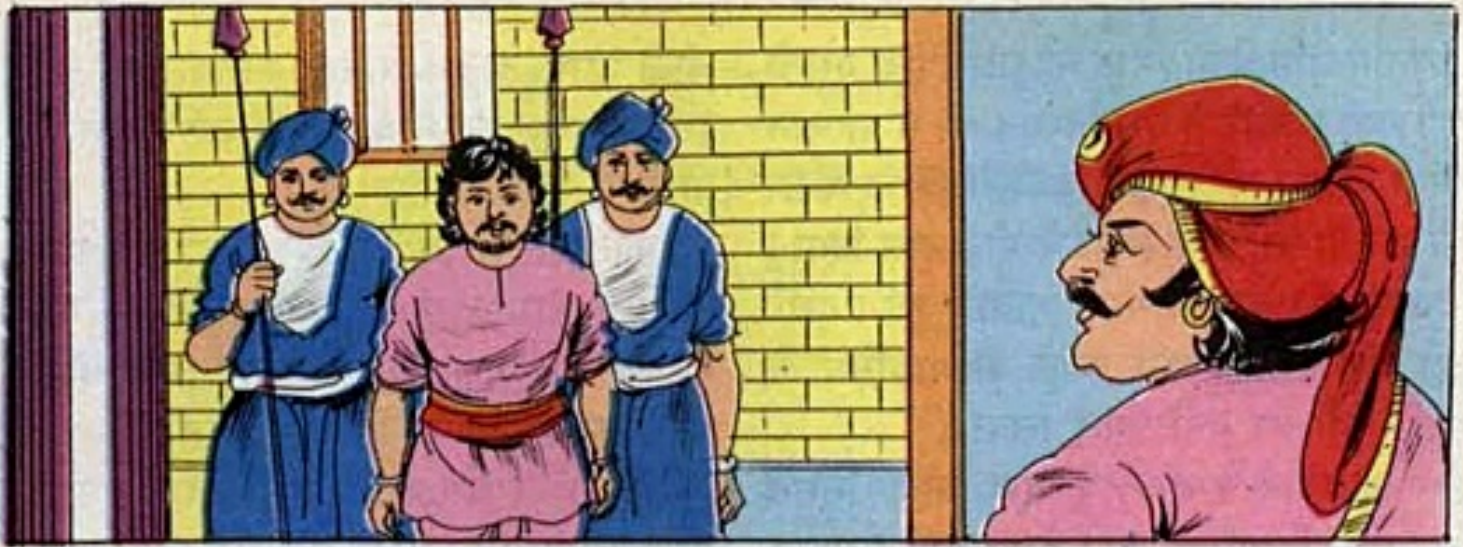
बहरा और अंधा

भूस्वामी महादेव के घर में चोरी करता हुआ पकड़ा गया भूषण। उसे दो साल की जेल की सज़ा हुई। आज ही वह रिहा हुआ। कोतवाल ने उसे बुलाकर कहा "अब तक तुम्हें मालूम हो चुका होगा कि चोरी करना अपराध है। मालूम हुआ या नहीं ?" भूषण ने विनयपूर्वक कहा "साहब, कौन नहीं जानता कि चोरी करना, धोखा देना गलत है, अपराध है।"

"यह जानते हुए भी तुमने चोरी क्यों की?" कोतवाल ने पूछा। "बड़ों का कहना है कि खानदानी पेशे को छोड़ना नहीं चाहिये। मेरे दादा, परदादाओं से चला आता हुआ यह पेशा है। अगर मैं कहूँ कि चोरी करना गलत है, तो इसका यह मतलब हुआ कि मैं जान-बूझकर अपने पूर्वजों का अपमान कर रहा हूँ।" भूषण ने कहा।

कोतवाल ने मुस्कुराते हुए पूछा "अब बताओ कि बाहर जाने के बाद क्या करने का इरादा है?" "जैसा मैं हमेशा करता रहता हूँ। यथावत् अपने कानों को साफ़ करूँगा।" भूषण ने कहा। "मेरे ही साथ खिलवाड़ करने की जुर्रत कर रहे हो? इतनी हिम्मत।" आगबबूला होते हुए कोतवाल ने कहा।

भूषण ने हाथ जोड़कर कहा "साहब, आपके साथ खिलवाड़ करने की हिम्मत मैं थोड़े ही करूँगा। आप कहाँ और मैं कहाँ।" "तुम्हारी बातों में ज़रूर कोई राज़ छिपा हुआ है। साफ़-साफ़ कहो।" कोतवाल ने कहा। एक दो क्षण रुककर भूषण बोला "साहब, भूस्वामी महादेव के घर में चोरी करने का मैंने फ़ैसला कर लिया। इसके दो हफ्तों के पहले ही किसी काम के बहाने उनके घर गया। मैंने जान लिया कि लोहे की संदूक घर में कहाँ है। दीवार में कहाँ छेद डालना है, योजना बना ली। दीवार के बाहर

गुरु ग्यानी

निशान लगा दिया। रात को मुझसे एक ग़लती हो गयी। अंधेरे में उस निशान को मैं पहचान नहीं पाया। जो छेद लोहे की संदूक के बगल में डालना था, ठीक संदूक के पीछे डाल दिया। कुदाल की चोट से थोड़ी आवाज़ हुई। दूसरे ही क्षण महादेव और उनके दो आदमियों ने मुझे वहीं का वहीं पकड़ लिया।''

कोतवाल ने सुनने के बाद कहा ''तुमने कहा था कि बाहर जाने के बाद मैं यथावत् कान साफ़ करूँगा। इसका क्या मतलब हुआ? तुमने तो अपनी इस आदत के बारे में कुछ नहीं कहा।''

''साहब, वहीं बताने जा रहा था। महादेव ने मुझे पकड़कर पीटा और कहा ''तेरी इतनी हिम्मत। क्या तुम समझ रहे हो कि मैं इतना बड़ा बहरा हूँ कि तुम्हारे कुदाल के खून-खून की आवाज़ भी सुनायी न पड़े। उस आवाज़ को सुनकर कुंभकर्ण भी जाग जायेगा।'' उनकी बातें सुनकर मुझे लगा कि कहीं मैं बहरा तो हो नहीं गया। जेल में ठूँसे जाने के बाद एक सलाई में कपास लगा दी और अपने कानों को साफ़ करने लगा। इन दो सालों में मेरे कान बराबर ठीक हो गये। चींटी हिले, तो भी आवाज़ सुनायी देती है। इसीलिए यथावत् मैं वह काम बाहर जाने के बाद भी करना चाहता हूँ।''

कोतवाल उसकी बातों पर बहुत नाराज़ हो गया और कहा ''तुम्हारे कहने का यह मतलब है कि तुमने हमेशा की तरह चोरी करने का ही निर्णय लिया। है ना?

भूषण चुप्पी साधे खड़ा रहा। तब कोतवाल ने छड़ी उसके कंधे पर रखकर कहा ''अरे बेवकूफ़, लगता है, तुमने एक बात पर ग़ौर नहीं किया। तुम उस रात को दीवार पर लगाये निशान को पहचान नहीं पाये तो इसका कारण है तुम्हारी आँखों की रतौंधी। तुम शबकोर हो। इस कारण तुम्हारी नज़र भी कमज़ोर होती जा रही है।''

भूषण ने तुरंत कोतवाल के पैरों पर गिरकर कहा ''मालिक, मैं चालीस साल का हूँ। तब बहरा होने के कारण जेल की सज़ा भुगतनी पड़ी। अब अंधा हो जाने के कारण एक और बार जेल आने की इच्छा नहीं रखता। भूस्वामी महादेव के यहाँ कोई नौकरी दिलवाइये। कोई ग़लत काम नहीं करूँगा।''

समुद्रतट की सैर – 19

कोरोमंडल तट के साथ और आगे

वर्णन : मीरा नायर ◆ चित्र : गोपकुमार

चेन्नै से उत्तर में आगे बढ़ने पर हम दक्षिण एशिया के सबसे बड़े समुद्रतालों में से एक के तट पर पहुंचते हैं. यह है *पुलिकाट*, जो कि बंगाल की खाड़ी के जल से बनी खारी झील है. यह तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश की सीमा पर पुलिकाट शहर के साथ सटी हुई है. झील में कई टापू हैं, जिन पर सीपियों की भरमार है. इन सीपियों को जला कर चूना बनाया जाता है.

पुलिकाट में एक पक्षी-अभयारण्य है. 1976 में इसकी स्थापना यहां आनेवाले प्रवासी हंसावरों

पुलिकाट झील

और तटीय पक्षियों की रक्षा करने के लिए की गयी.

डच लोगों ने भारत में जो सबसे पहली बस्तियां बसायीं, पुलिकाट उनमें से एक था. झील का काफी बड़ा हिस्सा आंध्र प्रदेश में पड़ता है. आंध्र प्रदेश भारत का पांचवें नंबर का सबसे बड़ा राज्य है. भाषा के आधार पर बनाया जानेवाला पहला

तटीय इलाके के शंकु-आकार की छतोंवाले झोपड़े.

राज्य भी वही है. चक्रवाती तूफान यहां काफी आया करते हैं और समुद्रतट पर ही नहीं काफी भीतर तक भारी तबाही मचाते रहते हैं. पुलिकाट झील के उत्तर में आंध्र प्रदेश के नेल्लूर जिले में *श्रीहरिकोटा* द्वीप है, जहां पर भारतीय अंतरिक्ष शोध संगठन इस्रो का रॉकेट-चालन केंद्र है. भारत का पहला संवेदी रॉकेट *रोहिणी* 9 अक्टूबर 1971 को यहीं से छोड़ा गया था. यहां से अब तक 400 संवेदी रॉकेट और 11 बड़े कृत्रिम उपग्रह छोड़े जा चुके हैं. अधिक बड़े प्रेषण-यानों के लिए यहां एक नयी प्रेषण-वेदी बनायी जा रही है.

श्रीहरिकोटा
में रॉकेट का प्रेषण

श्रीहरिकोटा द्वीप को अंतरिक्ष-अड्डा बना देने से यहां के घने जंगलों में रहनेवाले *येनाडी* कबीले के लोग विस्थापित हो गये. येनाडी मुख्यतया शिकार पर जीते हैं. आज भी बहुत-से येनाडी पत्थर के टुकड़ों को परस्पर टकरा कर आग पैदा करते हैं.

आंध्र प्रदेश अभ्रक के मुख्य उत्पादकों में से है और उसकी ज्यादातर अभ्रक नेल्लूर में खोद कर

निकाली जाती है. मगर नेल्लूर की ज्यादा प्रसिद्धि धान के उत्पादन के कारण है. इससे भी बढ़ कर नेल्लूर से जुड़ा हुआ है तेलुगु के महाकवि *तिक्कन* का नाम. वे 12 वीं सदी ई. के काकतीय राजा गणपति के करद राजा मनुमसिद्धि के दरबार में नेल्लूर में थे. तेलुगु के एक अन्य महाकवि नन्नय ने महाभारत का अनुवाद तेलुगु पद्य में आरंभ किया था, पर वे उसे अधूरा ही छोड़ गये थे. तिक्कन ने उसे पूरा किया और 'कविब्रह्मा' की उपाधि पायी. जिस छोटे-से मंदिर में बैठकर उन्होंने यह महान साहित्यिक काम किया था, वह आज सीमेंट के गोदाम के रूप में काम में आ रहा है !

तटवर्ती आंध्र में दो बड़ी बारहमासी नदियों से बने दो विशाल डेल्टा-क्षेत्र हैं – एक कृष्णा का, दूसरा गोदावरी का. दोनों नदियों का उद्‌गम पड़ोसी राज्य महाराष्ट्र में है.

कृष्णा के डेल्टा में नदी की एक धारा के किनारे *कुचिपुडि* गांव है, जहां प्रसिद्ध कुचिपुडि नृत्यशैली

का जन्म हुआ. 17 वीं सदी ई. के उत्तरार्ध में सिद्धेन्द्र योगी नाम के एक तपस्वी ने 'पारिजात-हरणम्' नामक तेलुगु कविता रची. उसमें इसका वर्णन है कि किस प्रकार श्रीकृष्ण ने अपनी पत्नी सत्यभामा के आग्रह पर स्वर्ग से पारिजात वृक्ष का अपहरण किया और उसे ला कर सत्यभामा के घर के बगीचे में रोपा. फिर सिद्धेन्द्र योगी ने उस कविता पर नृत्य का संयोजन किया और कुचिपुडि गांव के बालकों को वह नृत्य सिखाया.

प्रसिद्ध कुचिपुडि-गुरु वेम्पाटि चिन्न सत्यम् कुचिपुडि की दो मुद्राओं में

नृत्य अत्यंत लोकप्रिय हुआ और जब वह गोलकोंडा के अंतिम सुल्तान तथा कला के महान संरक्षक अब्दुल हसन ताना साहब के दरबार में प्रस्तुत किया गया तो सुल्तान इतना प्रसन्न हुआ कि उसने कुचिपुडि गांव सिद्धेन्द्र और उनके नृत्यदल को दान में दे दिया, किंतु इस शर्त के साथ कि यह गांव इस नवनिर्मित नृत्यशैली का केंद्र बना रहे. सिद्धेन्द्र योगी ने अपने शिष्यों से यह वचन ले लिया कि वे और उनके वंशज कुचिपुडि गांव में ही रहेंगे और उन घरानों का प्रत्येक पुरुष जीवन में कम से कम एक बार सत्यभामा की भूमिका अदा करेगा. आज भी गांव के प्रत्येक बालक को नृत्यदीक्षा दी जाती है, जिसके आरंभ में उसकी कमर में घंटी बांधी जाती है. यह नृत्य-प्रकार *कुचिपुडि* कहलाया.

राजा और राधा रेड्डी

जैसा कि हुआ करता है, समय के साथ-साथ कुचिपुडि में भी परिवर्तन हुए हैं और अब स्त्रियां भी इसे प्रस्तुत करती हैं.

जहां कृष्णा नदी बंगाल की खाड़ी में गिरती है वहां पर *मछलीपट्टणम्* अथवा *मसुलीपट्टम्* का बंदरगाह है, जो दीर्घ काल से प्रसिद्ध रहा है. इसका जिक्र 'द पेरिप्लस ऑफ़ द एरिथ्रियन सी' जैसी अतिप्राचीन

पुस्तक में भी है. सन 1680 ई. में यह डच लोगों का अड्डा था. 1750 ई. में इसे फ्रांसीसियों ने हथिया लिया और नौ साल बाद अंग्रेजों ने उनसे छीन लिया. इस तरह मछलीपट्टणम् आंध्र में अंग्रेजों के तावे में आनेवाले सबसे पहले शहरों में से था. 1 नवंबर 1864 को यहां भयंकर तूफान आया और बड़ी तबाही मची. तब से मछलीपट्टणम् का सामरिक महत्व घट गया. अब वह एक छोटा बंदरगाह मात्र है और कृष्णा जिले का मुख्यालय भी है.

पिंगलि वेंकय्या
रचित तिरंगा कांग्रेसी झंडा

स्वतंत्रता-संग्राम में मछलीपट्टणम् की शानदार भूमिका रही. स्वतंत्रता-सेनानी *गडिचर्ला हरिसर्वोत्तमराव* ने देशभक्त तरुणों को आधुनिक उद्योगतंत्र की शिक्षा देने तथा स्वदेशी आंदोलन को आगे बढ़ाने के लिए यहां *आंध्र जातीय कलाशाला* स्थापित की. कांग्रेस के तिरंगे झंडे की रचना करनेवाले *पिंगलि वेंकय्या* यहीं के निवासी थे. उनका बनाया तिरंगा झंडा आगे चल कर स्वतंत्र भारत के राष्ट्रध्वज का आधार बना. वरिष्ठ कांग्रेसी नेता डा. पट्टाभि सीतारामय्या भी मछलीपट्टणम् के ही थे.

कपड़े पर की जानेवाली प्रसिद्ध *कलमकारी* चित्रकला का भी मछलीपट्टणम् केंद्र है. इस कला की परंपरा सातवीं सदी ई.पू. जितनी पुरानी बतायी जाती है. आकर्षक पौराणिक दृश्य इसमें कलम की मदद से कपड़े पर अंकित किये जाते थे. इसीलिए इसका नाम कलमकारी पड़ा. किंतु अब लकड़ी के ठप्पों की मदद से ये चित्र छापे जाते हैं.
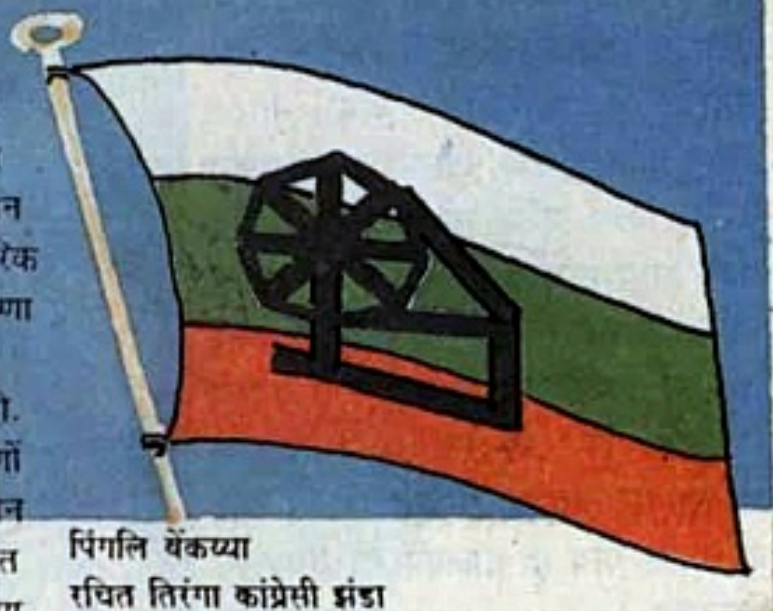
मनोहर की मनौती

युवक मनोहर शिवपुर गाँव का निवासी था। उसके बचपन में ही नाव की एक दुर्घटना में उसके माँ-बाप मर गये। उसकी नानी ने उसे पाला-पोसा और बड़ा किया। उसकी पढ़ाई में अभिरुचि नहीं थी, इसलिए वह कुछ ख़ास पढ़ नहीं पाया। मेहनत करने से दूर भागता था। नानी का खिलाया खाता था और बरामदे के एक कोने में खाट पर लेटा रहता था। नानी का विचार था, थोडा और बड़ा हो जायेगा तो गाँव के किसी धनी के यहाँ नौकरी कर लेगा। वह अठारह साल का हो गया, पर सुस्ती ने उसे नहीं छोड़ा।

उम्र जैसी-जैसी बढ़ती गयी, नानी को कम दिखायी देने लगा। पहले की तरह वह चरखा भी चला नहीं पा रही थी। इससे आमदनी कम हो गयी। तो फिर क्या खायें? कहाँ से खायें? नानी की इस दुस्थिति को देखकर ग्रामीणों ने मनोहर को खूब डाँटा। किसी के यहाँ उसे नौकरी करने के लिए कहा। पर उसकी समझ में नहीं आया कि क्या करूँ। लकड़ी काटना, खेतों में हल चलाना, बाग़ों में काम करना आदि से वह दूर भागता था। उनका नाम सुनते ही भय से उसका दिल धडकने लगता था।

मनोहर अब सोचने लगा कि बिना मेहनत किये कमाने के क्या-क्या रास्ते हैं। आखिर उसे लगा कि चोरी ही एकमात्र रास्ता है। चोरी करने की उसने एक योजना भी बनायी। परंतु वह डरने लगा कि पकड़ा जाऊँगा तो चर्बी उधेड देंगे, मार-पीटकर हड्डी-पसली एक कर देंगे। बहुत सोचता रहा कि क्या करूँ? तब उसे ग्रामदेवी शांभवी की याद आयी।

एक दिन रात को वह छिप-छिपकर मंदिर में पहुँचा। जब देखा कि कोई भी आसपास है नहीं तो वह देवी की प्रतिमा के

सुमलता

पास पहुँचा । उसकी नाक की नथ उतारते हुए वह काँपने लगा । उसने भक्तिपूर्वक देवी को नमस्कार किया और कहा "कोई और मार्ग न होने की वजह से, नानी के लिए यह चोरी कर रहा हूँ । मुझपर दया करो । मुझे कोई न पकड़े । इस नथ को बेचने पर जो रक़म मिलेगी, उसका आधा हिस्सा धर्म-हुंडी में डालूँगा ।"

प्रार्थना करने के बाद मनोहर में धीरज बढ़ गया । उसने नथ निकाली और जेब में डाल ली । मंदिर से बाहर आ गया ।

दूसरे दिन गाँववालों को मालूम हो गया कि देवी की नथ चुरायी गयी । लोगों ने सोचा कि इतना बड़ा पाप करनेवाला पापी अवश्य ही कोई पहुँचा हुआ चोर होगा । गाँववाले उसे पकड़ने के लिए यहाँ-वहाँ तहक़ीक़ात करने लगे ।

मनोहर ने आख़िरी क्षण धीरज बाँधकर चोरी तो की, किन्तु उस क्षण से वह अशांत रहने लगा । गाँव का कोई उसे घूरकर देखे या दूर से चिल्लाते हुए उसे बुलाये तो वह घबरा जाता था । उसे लगता कि उन्हें उसकी चोरी का पता लग गया ।

सप्ताह बीत गया । उसे लगने लगा कि किसी को उसपर संदेह नहीं है । गाँववाले भी इस संबंध में चुप हैं । कोई तहक़ीक़ात नहीं कर रहे हैं । अब उसे पूरा विश्वास हो गया कि कोई भी उसपर संदेह नहीं कर रहा है । अब वह सोचने लगा कि इस नथ को कैसे बेचा जाए ।

तीसरे दिन उस गाँव के शंभु की दुकान पर गया । इधर-उधर की बातें करने के बाद उसने दुकानदार से कहा "शंभूजी, वैसे ही पूछ रहा हूँ । बुरा न मानना । क्या कभी आपने चोरी का माल खरीदा?"

यह बात सुनते ही शंभू ने सामने पड़ा हथौड़ा लिया और तख़्ती को ज़ोर से मारते हुए कहा "ऐसे नीच काम बग़ल के गाँव का रमिया करता है । वह चोरी का सोना ही नहीं, बल्कि सस्ते में मिले तो काठ की चीज़ें भी खरीदता है । निकम्मा कहीं का ।" नाराज़ होते हुए उसने कहा ।

शंभू की बातों पर मनोहर हँसता हुआ बोला "बस, मज़ाक किया । समझ लीजिये, देवी की नथ जिसने चुरायी, वह आपके पास आये और सस्ते में बेचना चाहे तो, क्या आप उसे खरीदेंगे नहीं ।"

"खरीदने की बात तो दूर, उसे पकड़ूँगा

और इस हथौडे से उसे ऐसा पीटूँगा कि उसे नानी की याद आ जायेगी। उसे तुरंत पुलिस के सुपुर्द करूँगा। शंभु को क्या ऐरा-ग़ैरा समझ रखा है? आगे कभी मेरे पास आकर तुमने ऐसी बातें कीं तो तुम्हारी भी मरम्मत करूँगा।'' हथौड़े को दुकान के एक कोने में फेंकते हुए उसने कहा।

मनोहर उसे देखते हुए डर गया और हडबड़ाते हुए बोला ''पहले ही बोल दिया न, यह तो सिर्फ़ मज़ाक था। कौन नहीं जानता आपकी ईमानदारी। बुरा न मानना'' कहकर वह वहाँ से चला गया।

दूसरे दिन, देवी की नथ रमिया को बेचने निकला। रास्ते में उसकी मुलाक़ात वीर नामक एक पुलिसवाले से हुई। उसने मनोहर को रुक जाने के लिए कहा। मनोहर को लगा कि उसकी चोरी पकड़ी गयी। पर वीर ने अपनी जेब से चुरुट निकालते हुए कहा ''मेरे पास दियासलाई नहीं है। तुम्हारे पास हो तो देना।''

अब मनोहर की जान में जान आयी। उसने कहा ''मैं धूम्रपान नहीं करता।'' वीर कहता हुआ चला गया कि मैं भी पहले पीता नहीं था।

मनोहर रमिया का गाँव पहुँचा। वह किसी से पूछकर जानना चाहता था कि वह रहता कहाँ है, तो इतने में देखा कि पुलिसवाले दो आदमियों के हाथों में बेडियाँ डालकर ले जा रहे हैं।

रास्ते में गुज़रते हुए एक आदमी से मनोहर ने पूछा कि वे कौन हैं। उसने कहा ''वह घनी मूँछवाला रमिया है। दूसरे का नाम

नहीं जानता। चोरी का माल ख़रीदने के अपराध में रमिया को और बेचने के अपराध में उस दूसरे आदमी को क़ैद किया है।''

यह सुनते ही मनोहर का शरीर पसीने से भीग गया। जेब में पड़ी देवी की नथ चट्टान की तरह भारी लगने लगी। अब समझ में आया कि चोरी कितनी ख़तरनाक है।

वह तभी गाँव लौटा और देवी की मूर्ति के पैरों पर गिरकर कहने लगा ''माँ, मैंने चोरी करके बड़ा पाप किया। क्षमा करो। मैं भविष्य में कभी भी ऐसा पाप नहीं करूँगा।'' कहकर उसने नथ देवी की नाक में यथावत् रख दी।

अब मनोहर का मन शांत हो गया। जब वह रात को आराम से सो रहा था, तब उसमें एक संदेह जगा। उसने देवी को वचन

दिया था कि अगर वह पकड़ा न जाए तो नथ को बेचने पर प्राप्त होनेवाली रक़म का आधा हिस्सा धर्म-हुँडी में डालूँगा। देवी की उसपर दया थी, इसलिए वह पकड़ा नहीं गया। उसे अपनी करनी पर पश्चात्ताप हुआ, इसीलिए उसने नथ लौटा दी। परंतु मनौती के अनुसार, नथ के मूल्य का आधा हिस्सा धर्म-हुँडी में डालना चाहिये या नहीं।

खूब सोचने के बाद दूसरे दिन मनोहर ने अपने आप सोचा "नथ को न बेच पाना मेरी असमर्थता है। इससे देवी का कोई संबंध नहीं। यद्यपि मैंने नथ देवी को दे दी, फिर भी मनौती के अनुसार उसके मूल्य का आधा हिस्सा धर्म हुँडी में डालना मेरा धर्म है।"

अपनी मनौती पूरी करनी हो तो उसे मेहनत करनी चाहिये। उसने ठान लिया कि मेहनत करूँगा, कमाऊँगा और अपना वचन निभाऊँगा। गाँव के एक प्रमुख किसान से मिला और कहा "साहब, कोई नौकरी दीजिये। मुझसे आपको कोई शिकायत नहीं होगी।"

सुस्त मनोहर के स्वभाव से परिचित उस बड़े किसान ने पहले उसकी बातों का विश्वास नहीं किया। परंतु जब वह उसके पैर पड़ा, गिडगिडाया, तो वह नरम पड़ गया। खेत में ढेंकली से पानी खींचने का काम सौंपा। अपने पोते में आये परिवर्तन से उसकी नानी बहुत खुश हुई। किसान भी काम करने की उसकी पद्धति तथा उसकी मेहनत करने के स्वभाव पर बेहद खुश हुआ।

तीन महीने लगातार काम करने के बाद किसान ने जो धन दिया, उसमें से आधा हिस्सा उसने देवी के मंदिर के धर्म-हुँडी में डाला और अपनी मनौती पूरी की।

एक और महीने के बाद किसान ने मनोहर से कहा "अब जान गया हूँ कि तुम मेहनती हो। सुस्ती तुमसे दूर भाग गयी है। अब तुम्हें ढेंक़ली से पानी खींचने की ज़रूरत नहीं। तुम्हें अपना ख़ास नौकर बना रहा हूँ। इस महीने से तुम्हारा वेतन दुगुना हो जाएगा।"

मनोहर बहुत ही खुश हुआ। सुस्ती छूट गयी, चोर बनने की स्थिति टल गयी। किसान उसके स्वभाव की भरपूर प्रशंसा कर रहा है। उसे लगा कि यह सब उस देवी की कृपा है। मन ही मन उसने देवी को कृतज्ञता जतायी और भक्ति-श्रद्धापूर्वक उसे नमस्कार किया।

सुवर्ण रेखाएँ

१३ संसार में इन्हें कहाँ देख सकते है?

१. छे सौ से अधिक कुड्यचित्रों से भरी १७,००० वर्षों पूर्व की गुफ़ाएँ कहाँ है?

इन गुफाओं में 'हाल आफ बुल्स' (वृषभ मंडप) नामक अद्‌भुत भाग बहुत ही मुख्य है।

२. .... नौ मंजिलोंवाले इस स्तंभ को राजपूत शासक राणा कुंभा ने १४४० में निर्माण किया। यह कहाँ है?

विजयस्तंभ के नाम से विख्यात इस स्तंभ की ऊँचाई है ३६ मीटर।

३. .... अफ्रीका में बरफ से ढ़का हुआ पर्वत कहाँ है ?

यद्यपि यह भूमध्यरेखा के उष्ण प्रदेश में है, फिर भी इसकी चोटी बरफ से ढ़की हुई है।

४. .... जिराफी स्त्रीयाँ कहाँ है?

पडापुंग जाति की ये स्त्रीयाँ तीसरे साल से ही गले में तांबे के कंकण पहनती हैं। जैसे-जैसे उम्र बढ़ती जाती है, वैसे-वैसे इन कंकणों की संख्या भी बढ़ती जाती है। तांबे के ये कंकण गले की लंबाई को बढ़ाते हैं। लंबा गला सुंदर माना जाता है।

५. .... यह पुस्तकालय ८६० कि.मी. की चौड़ाई की अलमारियों से भरा है। इसमें लगभग दो करोड़ पुस्तकें है?

यह तीन भवनों में व्याप्त है। इस 'लैब्ररी आफ कांग्रेस' में ४० लाख मानचित्र हैं। ९० लाख छायाचित्र हैं। १३ लाख आडियो रिकार्ड हैं।

चित्र-पहेली
अरण्य वीर
अफ़्रीका के जंगलों में आदिम मानव पेड़ों की शाखाओं द्वारा दूसरे पेड़ों पर जा रहा है और बाघ को डरा रहा है। फिर भी इस चित्र में एक गलती रह गयी। ध्यान से देखिये और पता लगाइये कि यह गलती क्या है?
चित्र पहेली
यहाँ नौ देशों के मानचित्र हैं। किन्तु उनके नाम अस्तव्यस्त हैं। क्या उन्हें सही स्थान पर जोड़ सकेंगे ?
१. स्पेन
२. सौदी अरेबिया
३. मियान्मार
४. बोलीविया
५. चीन
मडगास्कर
७. ईजिप्ट
८. जर्मनी
९. जिंबाब्वे

शौकीले सवाल

१. दोनों को मिलाने पर ५५ पैसों के सिक्के मेरे पास हैं। उनमें से एक पचास पैसों का सिक्का नहीं है। फिर वे दोनों सिक्के क्या हैं?

२. तोते बेचनेवाले ने कहा "यह तोता आपकी हर बात को दुहरायेगा।" उसकी बातों का विश्वास करके एक आदमी ने एक तोता खरीदा और उसे बातें सिखाने की भरसक कोशिश की। किन्तु वह तोता एक भी शब्द दुहरा नहीं सका। तोतेवाले ने झूठ नहीं कहा। पर ऐसा क्यों हुआ; आप बता सकते हैं?

३. राजदंपति की तीन बेटियाँ हैं। हर बेटी का एक भाई है। कुल मिलाकर उस परिवार में कितने सदस्य हैं।

४. ग्रीनलांड को खोज निकालने के पहले कौन-सा द्वीप बहुत बड़ा द्वीप था?

५. सिनिमा देखते एक मित्र को अपने साथ दो बार ले जाना। अथवा दोनों मित्रों को एकसाथ ले जाना - इन दोनों में से कम खर्च किसमें होता है?

६. एक पेटी में पाँच सेब हैं। उन्हें पाँच लड़कियों में समान रूप से बाँटना चाहिये। किन्तु एक सेब पेटी में ही होगा। यह कैसे संभव है?

७. सच बोलनेवालों और झूठ बोलनेवालों की बैठक चल रही है। वहाँ एक आदमी आपसे कहता है कि अभी-अभी एक लड़की कह रही थी कि मैं एकदम झूठी हूँ। वह आदमी झूठा है या सच्चा?

८. सेना में बहुत बड़े 'बूट्स' किसे मिलते हैं?

कीजिये

फूलों का कुँड

आवश्यक चीज़ें

खाली शीशी, अंडे का खपड़ा, गोंद, रंग

बनाने का तरीका

अ) अंडे के खपड़े को साबुन के पानी से साफ़ कीजिये।

आ) उसके छोटे-छोटे टुकड़े कीजिये।

इ) एक-एक टुकड़े को गोंद से शीशी पर चिपकाइये।

ई) अंडे के खपड़ोंपर चमकदार विविध रंग डालिये। सुंदर फूलों का कुंड तैयार।
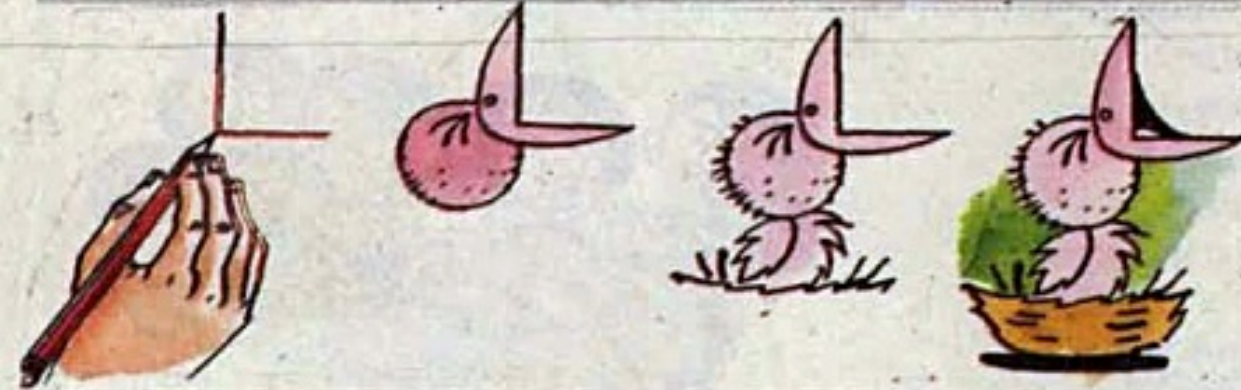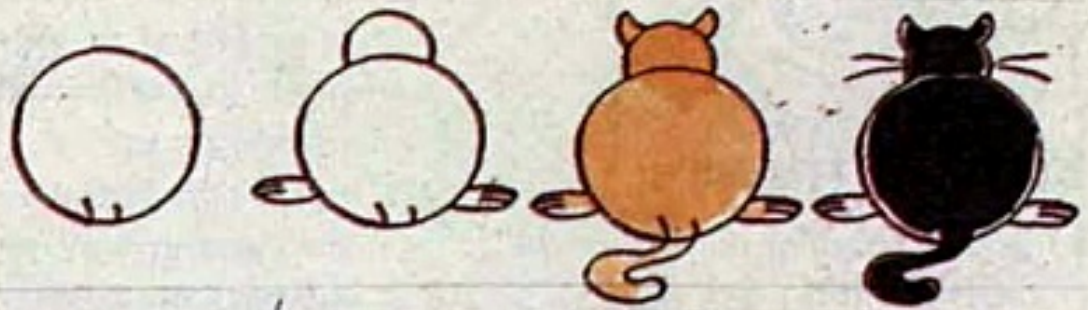
सुवर्ण रेखाएँ - १२ के उत्तर

संसार में कहाँ?

१. दक्षिण अमेरीका के ईक्वडार के उस ओर के डालपगोंस द्वीप
२. वाटिकन सिटी
३. पेरू - बोलीविया की सरहदों पर स्थित टिटिकाका सरोवर
४. आस्ट्रेलिया के सिडनी हार्बर से होते हुए
५. राजस्थान का देषनाक

कथा-पहेली

कपड़े उतारकर वे पानी में उतरे। ऐसी स्थिति में वे बिस्कुटें अपनी जेब में कैसे भर सकते हैं?

शौकी ले सवाल

१. जब उसपर महावत बैठा हुआ होता है।
२. तराजू का कांटा जब ख़राब हो जाता है।
३. पृष्ठ को उल्टे घुमाइये।
४. साँप की पलकें नहीं होतीं, इसलिए वे आँख बंद नहीं कर सकते।
५. जब वे दो हों।
६. घड़ी
७. शीशी
८. सच नहीं है। सैनिक का एक ही हाथ है। इसलिए म्यान से तलवार निकालकर दूसरे हाथ को काटना संभव नहीं है।

पांडवों ने सैरंध्री का पराभव करके भेज दिया। जब वे काम्यकवन में रह रहे थे तब मार्कंडेय वहाँ पधारे। वनवास करते समय उनपर क्या-क्या बीता, उन्हें कितने कष्ट झेलने पड़े आदि विवरण धर्मराज ने मार्कंडेय को दिया। साथ ही उसने दुख-भरे स्वर में बताया कि उनके कारण द्रौपदी कितने कष्ट झेल रही है। तदुपरांत मार्कंडेय से धर्मराज ने पूछा "महात्मा, क्या किसी पतिव्रता स्त्री ने द्रौपदी की तरह पूर्व कभी इतने कष्ट झेले?"

तब मार्कंडेय ने उन्हें सावित्री की कथा यों सुनायी। मुद्रदेश का शासक था अश्वपति। वह बड़ा ही धर्मात्मा राजा था। उसकी कोई संतान न थी। वह कठोर नियमों का पालन करते हुए सावित्री देवी की उपासना करता था। होम करता था। अंत में एक दिन होमकुंड से सावित्री प्रत्यक्ष हुई और उससे पूछा कि तुम्हें क्या चाहिये। अश्वपति ने दोनों हाथ जोड़ते हुए सावित्री से निवेदन किया "देवी, वंशोद्धारक पुत्र चाहिये।"

"राजन्, मैं जानती थी कि तुम मुझसे क्या माँगनेवाले हो। अत: मैंने पहले ही ब्रह्मा से पूछ लिया। उन्होंने तुम्हें एक पुत्री ही का वरदान देने की स्वीकृति दी। इस वर मात्र को स्वीकार करके अपना जीवन धन्य करो। इसी से संतृप्त हो जा" कहकर देवी सावित्री अदृश्य हो गयी।

अश्वपति ने तपस्या त्यज दी और राजधानी लौटा। यथावत् जब वह शासन की बागडोर संभालने लगा तब उसकी पत्नी मालवी गर्भवती हुई। एक शुभमुहूर्त पर उसने एक सुंदर पुत्री को जन्म दिया। उसका नाम रखा गया - सावित्री।

सावित्री बड़े ही लाड़-प्यार से पली। दिन-ब-दिन उसके सौंदर्य में निखार आने

लगा। देखनेवालों को लगता था कि वह कोई देवी है, देवी सावित्री ने ही मानव-रूप लिया है। अश्वपति ने एक दिन उससे कहा "पुत्री, तुम विवाह के योग्य हो गयी हो। पता नहीं, क्यों कोई भी राजकुमार तुमसे विवाह करने आ नहीं रहा है। मेरी इच्छा है कि अपने लिए योग्य वर तुम्हीं चुन लो। मैं उससे तुम्हारा विवाह रचाऊँगा और अपना कर्तव्य निभाऊँगा।"

सावित्री योग्य वर की खोज में मग्न थी। तब एक दिन महामुनि नारद, अश्वपति के पास आये और लोक-समाचार सुनाते गये। उस समय सावित्री अपना पर्यटन समाप्त करके घर लौटी। उसने अपने पिता और नारद को प्रणाम किया और उनके सम्मुख खड़ी हो गयी। नारद ने अश्वपति से पूछा "राजन्, तुम्हारी पुत्री कहाँ से लौट रही है? अपनी पुत्री का विवाह अब तक क्यों नहीं किया?"

"मुनिवर, अपने योग्य पति को चुनने के लिए इसे भेजा। अब इससे जानना होगा कि वह इस कार्य में सफल हुई अथवा नहीं" कहते हुए अश्वपति ने अपनी पुत्री से पूछा "पुत्री, जिस कार्य पर तुम गयी थी, क्या वह पूर्ण हुआ?"

सावित्री ने अपने पिता से कहा "द्युमत्सेन दीर्घ काल तक साल्वदेश के महाराज रहे। वृद्धावस्था में उनका एक पुत्र हुआ। वे दुर्भाग्यवश अंधे हो गये। इसका लाभ उठाकर द्युमत्सेन के हाथों जो राजा पूर्व पराजित हुए, उन्होंने उनसे उनका राज्य छीन लिया। वे वृद्ध राजा अपनी पत्नी व पुत्र के साथ अरण्य में तपस्या करते हुए रह रहे हैं। बाल्यकाल से ही द्युमत्सेन के पुत्र आश्रम में पले और मुनिकुमार की तरह बड़े हुए। उनमें क्रूर-बुद्धि नाम मात्र के लिए भी नहीं है। सदा सच ही बोलते हैं। उनका नाम है - सत्यवान। मैंने उस सत्यवान को अपना वर चुना है।"

यह सुनते ही नारद ने दीर्घ श्वास लेते हुए कहा "यह तो बहुत बड़ा अमंगल हुआ। सावित्री ने अनजाने में उस युवक को अपना पति चुन लिया।"

अश्वपति ने घबराते हुए कहा "मुनीश्वर, कोई बात ऐसी नहीं, जिसे आप नहीं जानते हों। वह सत्यवान कैसा युवक है? गुण, रूप व शील में वह कैसा है?"

नारद ने कहा "राजन्, द्युमत्सेन की ही

तरह उसका पुत्र भी सत्यव्रती है। वह अश्वों के चित्र अच्छी तरह खींचता है। इसलिए उसे चित्राश्वी कहकर भी पुकारते हैं। अश्विनी देवताओं की तरह वह अति सुँदर है। समस्त सद्गुण-संपन्न है। किन्तु वह एक और वर्ष तक ही जीवित रहेगा। आज से ठीक एक वर्ष के बाद उसका जीवन समाप्त हो जायेगा। मृत्यु-लोक का अतिथि हो जाएगा।''

नारद की बातों पर अश्वपति चिंतित होते हुए बोला ''पुत्री, इस अल्प आयु के युवक को भुलाकर किसी और से विवाह रचाओ।''

''एक बार जब मैंने मनसा, वाचा, कर्मणा किसी को अपना वर चुन लिया है तब चाहे वह अल्प आयु का हो, दीर्घायु का हो, सज्जन हो, दुर्जन हो, शिष्ट हो अथवा दुष्ट, वह शाश्वत रूप से मेरा ही पति है। किसी और को चुनने का प्रश्न ही नहीं उठता। सत्यवान को छोड़कर मैं किसी और से कदापि विवाह नहीं करूँगी। उन्हीं से मेरा विवाह कराइये'' सावित्री ने गंभीर स्वर में अपने पिता से कहा।

नारद ने भी अश्वपति से कहा ''राजन्, तुम्हारी पुत्री का निर्णय दृढ़ है। अटल है। उसके मन में परिवर्तन लाना तुमसे संभव नहीं। सच कहा जाए तो कोई भी वर्तमान राजकुमार सत्यवान की समानता नहीं कर सकता। सावित्री का विवाह उसी से करावो। इसके सुकृत कर्म अच्छे हों तो हो सकता है, सत्यवान दीर्घ आयु का हो जाए। शुभमस्तु।'' कहकर नारद स्वर्ग चले गये।

नारद के कहे अनुसार अश्वपति ने अपनी पुत्री सावित्री का विवाह सत्यवान से करने

का निश्चय किया। वह परिवार सहित द्युमत्सेन के आश्रम में गया।

वृद्ध व अंधा द्युमत्सेन बरगद के पेड़ के नीचे बैठा हुआ था। अश्वपति ने पास जाकर कहा ''आपके पुत्र सत्यवान से अपनी पुत्री सावित्री का विवाह संपन्न करने के उद्देश्य से यहाँ आया हूँ। आप उसे बहू के रूप में स्वीकार कीजिये।''

''राजन्, हमने राज्य खोया और निराश्रित होकर इस अरण्य में जीवन व्यतीत कर रहे हैं। आपकी पुत्री सुकुमारी है, क्या वह कष्ट झेल पायेगी?'' द्युमत्सेन ने संदेह प्रकट किया।

''सुख-दुख मनुष्य के अधीन नहीं होते। मेरी पुत्री इस सच्चाई को जानती है। यह सब कुछ सोचने-विचारने के बाद ही हम यहाँ आये हैं। मेरी पुत्री और आपके पुत्र की

जोड़ी हर प्रकार से उत्तम प्रमाणित होगी। इस विवाह के लिए अपनी सम्मति दीजिये।'' अश्वपति ने सविनय कहा।

द्युमत्सेन बहुत ही संतुष्ट हुआ। उसने आश्रम के सब मुनियों को आह्वान दिया और एक शुभमुहूर्त पर उनकी उपस्थिति में सावित्री-सत्यवान का विवाह रचाया। अश्वपति परिवार सहित राजधानी लौटा।

पिता के चले जाते ही सावित्री ने अपने रेशमी वस्त्रों व आभूषणों को निकाल दिया। पति की ही तरह उसने भी वल्कल वस्त्र पहन लिये। सास-ससुर व पति की सेवाओं में मग्न हो गयी। सादे जीवन के प्रति उसकी अभिरुचि बढ़ती गयी।

किन्तु अपने पति की आयु के दिन वह प्रति दिन गिनने लगी। वह जानती थी कि उसके पति के जीवन का हर दिन क्षीण होता जा रहा है। नारद के कहे अनुसार अब वे और चार दिनों तक ही जीवित रहेंगे। अब उसने त्रिरात्रि उपवास का प्रारंभ किया।

''पुत्री, तुम वैसी ही बड़ी सुकुमारी हो, तिसपर तुमने यह व्रत क्यों रखा? मैं कह नहीं पा रहा हूँ कि यह कठोर व्रत छोड़ दो।'' द्युमत्सेन ने सावित्री से कहा।

''दृढ़ निश्चय का होना पर्याप्त है। यह हो तो कठिनतम कार्य भी निर्विघ्न पूर्ण होते हैं। दृढ़ निश्चय लेकर ही मैंने इस व्रत का प्रारंभ किया और इसमें कोई ढिलाई नहीं आने दूंगी।'' सावित्री ने कहा।

सावित्री को अपने उपवास की कोई चिंता नहीं थी। चिंता तो उसे अपने पति के बारे में थी, जिसे मृत्यु निगलनेवाली है। तीनों रातें गुज़र गयीं। नारद के कहे अनुसार सत्यवान के जीवन का वह अंतिम दिन था।

उस दिन सावित्री ने प्रातःकाल ही अग्नि को प्रज्वलित किया, होम किया, अपने सास-ससुर के पैर छुये और ऋषि मुनियों को प्रणाम किया। उनसे 'दीर्घ सुमंगली भव' का आशीर्वाद पाया। आनेवाले संकट के बारे में सोचती हुई मौन बैठी रह गयी।

''पुत्री, तुम्हारा व्रत तो पूरा हो गया। अपना उपवास तोड़े बिना चुप क्यों बैठी हो?'' सास-ससुर ने पूछा।

''इस व्रत की पद्धतियों के अनुसार सूर्यास्त के बाद ही उपवास तोड़ना चाहिये।'' सावित्री ने उन्हें समझाया।

समिधाएँ, फल-फूल आदि ले आने

सत्यवान ने कुल्हाड़ी अपने कंधे पर रख ली और अरण्य की ओर निकलने लगा। तब सावित्री ने अपने पति से कहा "मैं भी साथ चलूँगी। आज आपको छोड़कर रहने की इच्छा नहीं हो रही है।"

"पगली, तुम्हें मालूम नहीं कि जंगल कैसा होता है। वहाँ रास्ते भर कंकड़, पथ्थर और काँटे होते हैं। अलावा इसके, तीन दिनों से तुमने उपवास का व्रत ले रखा है। चल-फिरने की शक्ति भी नहीं होगी।" सत्यवान ने कहा। "उपवास के कारण मैं बलहीनता का अनुभव नहीं कर रही हूँ। पता नहीं क्यों, आज जंगल जाने की सूझी। मेरी प्रार्थना का तिरस्कार मत कीजिये।" सावित्री ने कहा।

"जैसी तुम्हारी इच्छा। परंतु मेरे माता-पिता मान जाएँ, तभी मेरे साथ आ सकोगी।" सत्यवान ने कहा।

सावित्री ने ससुर से अपनी इच्छा बतायी। उसने कहा "मेरे आये एक साल बीत गया। अरण्य देखने की इच्छा, इच्छा बनकर ही रह गयी। कृपया मुझे अपने पति के साथ अरण्य जाने की अनुमति दीजिये" सावित्री ने अनुरोध किया।

सावित्री ने कभी भी कुछ नहीं माँगा, इसलिए द्युमत्सेन ने उसे अपने पति के साथ अरण्य जाने की अनुमति दी।

यद्यपि सावित्री मन ही मन चिंतित थी, फिर भी सास-ससुर की अनुमति लेकर, आनंद प्रदर्शित करती हुई सत्यवान के साथ अरण्य गयी। सत्यवान उसे अरण्य की सुंदरता व शोभाएँ दिखाता हुआ जा रहा था, परंतु सावित्री को लग रहा था, मानों उसका पति मृत्यु के गले लगने जा रहा हो।

सत्यवान ने फलों व फूलों से टोकरी भर दी और फिर लकड़ियाँ काटने में जुट गया। थोड़ी ही देर में वह थकावट महसूस करने लगा। पसीने से उसका शरीर भीग गया। उसने कुल्हाड़ी नीचे फेंकी और सावित्री के पास आकर कहने लगा "सिर फटा जा रहा है। शरीर काँप रहा है। खड़ा भी नहीं हो पा रहा हूँ। थोड़ी देर सो जाऊँगा।"

सावित्री ने अपनी जाँघ पर पति का सिर रख लिया और थोड़ी देर उसे सोने दिया। थोड़ी देर बाद उसने अपने पति के निकट एक आकार देखा। वह व्यक्ति काला था, उसकी आँखें लाल थीं, नील वस्त्रों को पहने हुए था, हाथ में पाश था, देखने में भयंकर लग रहा था। उसे देखते ही उसने सत्यवान

का सिर अपनी जाँघ से हटाकर ज़मीन पर रखी और खड़ी हो उस व्यक्ति को सविनय नमस्कार किया। पूछा "महोदय, आप कौन हैं? किसलिए आये हैं?"

"देवी, मैं यम हूँ। तुम पतिव्रता हो, इसलिए मुझे देख सकी। सत्यवान की आयु समाप्त हो गयी। चूँकि वह धर्मात्मा है, इसलिए अपने दूतों को न भेजकर स्वयं उसे ले जाने चला आया।" कहते हुए यमराज ने अपना पाश फेंका। सत्यवान के शरीर से अंगूठे के प्रमाण के जीव को बाहर निकाला और दक्षिण की ओर जाने लगा।

सावित्री ने अपने पति के मृत शरीर को एक स्थल पर सुरक्षित रखा और यम के पीछे-पीछे जाने लगी। यम ने उसे वापस जाने को कहा। किन्तु सावित्री ने स्पष्ट शब्दों में कह दिया कि मेरे पति जहाँ-जहाँ जायेंगे, वहाँ-वहाँ मैं उनके साथ-साथ आऊँगी। उसने कहा भी कि यह मेरा धर्म है।

यम संतुष्ट हुआ और उसने सावित्री से कहा "अपने पति के प्राणों को छोड़कर जो वर चाहो, माँगो।"

"मेरे ससुर वृद्ध और अंधे हैं। उन्हें बल और दृष्टि प्रदान कीजिये।" यम ने सावित्री के इस वर को मान लिया। पर सावित्री यम के पीछे-पीछे ही आने लगी। उससे छुटकारा पाने के लिए यम ने कहा कि एक और वर माँग लो। सावित्री ने इस बार वर माँगा कि ससुर को पुनः राज्य-प्राप्ति हो। यम ने यह वर भी उसे प्रसादा। फिर भी सावित्री यम के पीछे-पीछे ही आती रही। यम ने उसे तीसरा वर भी माँगने की अनुमति दी।

सावित्री ने इस बार माँगा कि उसके पिताश्री अश्वपति के सौ पुत्र हों। यम ने उसे यह वर भी दिया। यम ने देखा कि

इतने वरों की प्राप्ति के बाद भी सावित्री वापस जाने का नाम नहीं ले रही है तो उसने इस आशा से चौथा वर भी माँगने की उसे अनुमति दी कि शायद यह वर पाकर वह लौट जाए। सावित्री ने इस बार माँगा कि उसकी व सत्यवान के वंश की वृद्धि हो और उनके सौ पुत्र हों। "तुम्हारे सौ पुत्र होंगे। अब वापस लौट जाओ" यम ने कहा। "तब मेरे पति के प्राण लौटा दीजिये" सावित्री ने कहा।

कोई दूसरा और चारा न पाकर यम ने सत्यवान का प्राण वहीं छोड़ दिया और चला गया। वह वर वापस ले भी नहीं सकता था, इसलिए विवश होकर सावित्री की माँग पूरी करनी पड़ी। सावित्री अपने पति के शरीर के पास लौटकर आ गयी। उसका सिर अपनी जाँघ पर रखकर मौन बैठी रह गयी। थोड़ी ही देर में सत्यवान की आँखें खुल गयीं। उसने सावित्री को देखते हुए कहा "क्या मैं बहुत देर तक सो गया? मैंने सपने में देखा कि कोई काला आदमी मुझे बहुत दूर तक ले गया।" "बाद बताऊँगी कि क्या हुआ। संध्या ढल रही है और अंधेरा छा रहा है। आप उठकर चल सकें तो आश्रम पहुँचेंगे।" सावित्री ने कहा।

सावित्री को उसे उठाकर खड़ा करना पड़ा। सावित्री धीरे-धीरे उसे चलाती हुई, खिली चाँदनी में राह देखती हुई आश्रम पहुँची।

द्युमत्सेन को अकस्मात् ही दृष्टि प्राप्त हो गयी। अंधेरा बढ़ता जा रहा है, फिर भी पुत्र व बहू के जंगल से न लौटने के कारण बहुत ही चिंतित हो गया। वह पत्नी के साथ निकल पड़ा और पुत्र व बहू का नाम ले लेकर ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाता हुआ जंगल की ओर जाने लगा।

इतने में सावित्री-सत्यवान आ ही गये। तब तक आश्रम के सब लोग इकट्ठे भी हो गये। सावित्री ने सविस्तार सबको बताया, जो हुआ।

यम के वर व्यर्थ नहीं हुए। द्युमत्सेन को पुनः राज्य प्राप्त हो गया। अश्वपति के पुत्र हुए। सावित्री-सत्यवान के भी पुत्र हुए।

मार्कंडेय ने पाँडवों को यह कहानी सुनाकर कहा "द्रौपदी के पातिव्रत्य के कारण आप लोगों के कष्ट भी दूर हो जायेंगे।" यह आश्वासन देकर वे वहाँ से चले गये।

"चन्दामामा" की खबरें

भिन्न नया वर्ष

हिन्दुओं का विश्वास है कि विश्व ब्रह्मा की सृष्टि है। हमारे पूर्वजों ने काल-क्रम को चार युगों में विभाजित किया। ये हैं - कृतयुग, त्रेतायुग, द्वापर युग, कलियुग। विश्वास किया जाता है कि कलियुग के चौथे पाद के ५,०९७ साल गुज़र गये और ४,३२,००० सालों के बाद युग का अंत हो जायेगा। एक अंदाज़ा है कि इस विश्व की सृष्टि हुए १,१५५, ८८५,०९७ साल गुज़र गये। हमारे देश के बहुत-से प्रांतों में अप्रैल ८ को नये वर्ष का आरंभ हुआ। इसके ठीक छे दिनों के बाद अप्रैल १४ को बंगाल, असम, तमिलनाडु, केरल प्रांतों में नया साल शुरु हुआ।

एकांत दिवस

इंडोनेशिया के बाली द्वीप में हिन्दुओं की संख्या अधिक है। वहाँ हर साल अप्रैल ९ को एकांत दिवस मनाया जाता है। उस दिन कोई भी घर से बाहर नहीं आता। बत्तियाँ बुझा देते हैं। यात्राएँ नहीं करते। किसी भी प्रकार का विनोद-कार्यक्रम मनाया नहीं जाता। विशेष अनुमति-प्राप्त वाहन ही सड़कों पर चलते हैं। साधारणतया पर्यटकों के आने-जाने में व्यस्त इस द्वीप में लगभग बीस घंटों तक चुप्पी छा जाती है।

सोने का डाक-टिकट

इंडोनेशिया के अध्यक्ष सुहार्तो की धर्मपत्नी सिती हर्तीना एक साल पहले दिवंगत हुई। अप्रैल, २८ को उनके मृत्यु-दिवस पर, उनके सम्मानार्थ इंडोनेशिया के डाक-विभाग ने प्रत्येक रूप से डाक-टिकट निकाला। ३०,००० डाक-टिकट मात्र निकाले गये। ये डाक-टिकट सोने से बनाये गये हैं। हर डाक-टिकट की क़ीमत होगी ११२ डालर (लगभग चार हज़ार रुपये।) प्रथम दिन लिफ़ाफ़े पर उनके पति अध्यक्ष सुहार्तो का हस्ताक्षर होगा।

जिगरी दोस्त

चेट्टीलाल अयोध्या का निवासी है तो महम्मद माटिन पास ही के फैजाबाद का। पचास सालों से साथ-साथ घूमते-फिरते रहे। महम्मद माटिन अचानक अस्वस्थ हो गया। यह बात उसके मित्र चेट्टीलाल को मालूम हुई। वह तुरंत फ़ैजाबाद जाने निकल पड़ा। पर उसके पहुँचते-पहुँचते माटिन मर गया। दोस्त के मृत शरीर को देखकर चट्टीलाल से दुख सहा नहीं गया और वह बेहोश हो गया। थोड़ी ही देर में वह भी मर गया। अप्रैल १२ को दोनों मित्रों की अत्यक्रियाएँ अलग-अलग हुईं। दोनों शहरों के लोगों का कहना है कि जिगरी दोस्तों की यह घटना हिन्दू-मुस्लिम मैत्री का ज्वलंत उदाहरण है।

पृथ्वी पर स्वर्ग - नीलगिरि

दक्षिण भारत की पश्चिमी घाटियों में नीलगिरि पर्वत विस्तरित हैं। इन पर्वतों के इर्द-गिर्द की हरियाली बहुत ही सुहावनी लगती है। यहाँ लगभग तीस प्रकार के जंगली फूल बड़ी मात्रा में विकसित होते हैं। 'नीलगिरि टाहर' कहलायी जानेवाली जंगली बकरियों का यह निवास स्थल है। इस जाति की बकरियाँ अब लगभग हज़ार मात्र ही हैं।

बारह सालों में एक बार विकसित होनेवाले 'कुरिंजि' पुष्प पर्वत-प्राँतों को नीले रंग से ढक देते हैं और अपनी शोभा से मन को मुग्ध करते हैं। सांभर और चीते जंगल में रहते हैं। इन जंगलों में तरह-तरह के 'बाल्सम' जाति के वृक्ष हैं। इनकी टहनियाँ काई से ढकी होती हैं। यहाँ चित्र-विचित्र रंगों से भरे तरह-तरह के फूल विकसित होते हैं। नीलगिरि पर्वतों की प्राकृतिक शोभाएँ दर्शकों को आनंद और आश्चर्य में डुबो देती हैं। इसी कारण कहा जाता है कि नीलगिरि भूमि पर उतरा स्वर्ग है।
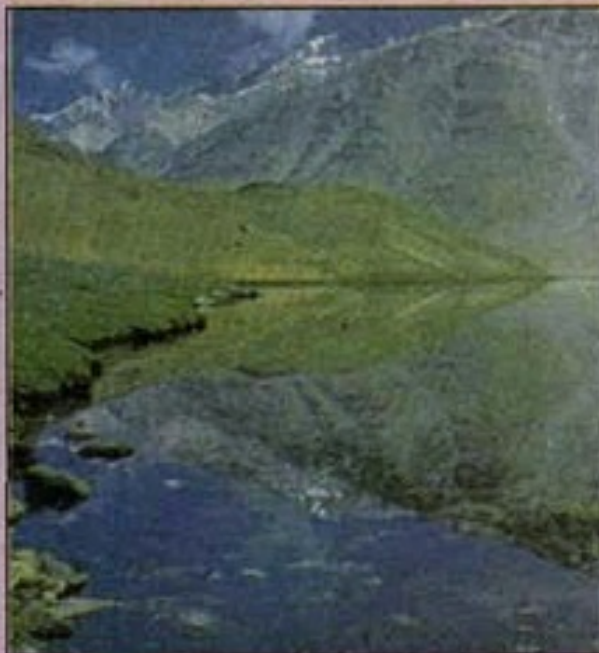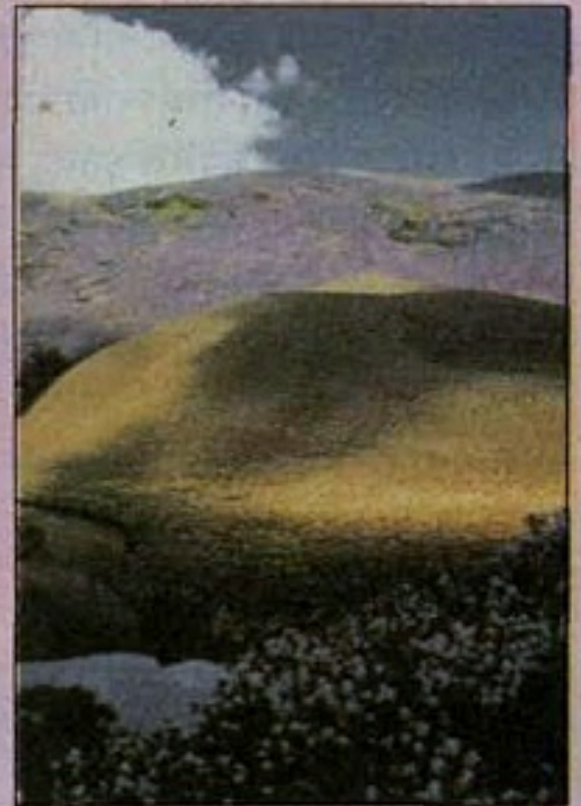
सूर्यवंश का मूल पुरुष : इक्ष्वाक

भारतीय नागरिकता की अभिवृद्धि तथा उसकी संस्कृति के सर्वतोमुखी विकास में योगदान देनेवालों में से ऋषि और राजा मुख्य हैं। इन्होंने इन क्षेत्रों में विस्तृत प्रयास किये। हर भारतीय थोड़ा-बहुत अवश्य ही जानता है कि वसिष्ठ, विश्वामित्र आदि ऋषि कौन हैं। श्रीराम, जनक आदि राजाओं के बारे में भी उसे मालूम है।

विश्वामित्र ने सिंहासन का परित्याग किया और ऋषि बने। जनक राजा थे, किन्तु मानसिक रूप से उन्होंने ऋषि की तरह जीवन व्यतीत किया। हमारे कितने ही ऐसे राजा थे, जो साहसी, वीर, शासन-दक्ष, त्यागी तथा जाति-निर्माता के नाम से सुविख्यात हुए। आदर्श राजाओं में अग्रगण्य हैं श्रीराम। आदर्शपूरित उनका शासनकाल रामराज्य के नाम से सुविख्यात है। सदियों से प्रजा उनके प्रति श्रद्धालु है।

श्रीराम इक्ष्वाकों में सर्वश्रेष्ठ माने जाते हैं। वे सूर्यवंश के हैं। सूर्यवंश के मूलपुरुष हैं, इक्ष्वाक। इक्ष्वाक के पिताश्री हैं वैवस्वतमनु। माता का नाम है श्रद्धादेवी। वैवस्वत का अर्थ है, सूर्यभगवान का पुत्र।

इक्ष्वाक के बारे में अधिक विवरण उपलब्ध नहीं है। हरिश्चंद्र, नगर, भगीरथ आदि जैसे सुप्रसिद्ध राजाओं ने सूर्यवंश में जन्म लिया। अतः इस सूर्यवंश के मूलपुरुष होने के कारण उनका नाम चिरस्थायी हो गया।

क्या तुम जानते हो?

इन्का

रेड इंडियनों की संतति के इन्का पेरु में रहा करते थे। वे अधिकतर राजधानी

कूजो परिसर प्राँतों में रहा करते थे। इनमें संपन्न राजा भी थे और गुलाम भी। ये अनेकों वर्गों में विभजित थे। ये 'वीरकोच' नामक भागवान की पूजा करते थे। इनके कलाकार कलात्मक वस्तुओं को तैयार करने में सिद्धहस्त थे। उनसे सृजित चंद वस्तुएँ अब भी हैं। मक्का, आलू तथा कुछ और तरकारियाँ उपजाते थे। ये ही उनके प्रधान आहार थे। इल्मा नामक जंतु को पनपाते थे। दैनिक जीवन में इस जंतु का मुख्य स्थान था।

इंद्रधनुष

बरफ़ का आदमी

'एस्किमो' का मतलब है, कच्चा मांस खानेवाला। एस्किमो सील जंतु का मांस खाते हैं। सील के चर्म का उपयोग तंबुओं व कपड़े बनाने के काम में होता है। 'कायाक' कहलायी जानेवाली इनकी नावें सुप्रसिद्ध हैं। 'कायाक' में बैठा बरफ़ का आदमी सील चर्म से बना कोट पहनता है। 'स्लेड्जेस' वह वाहन है, जिसे ज़मीन पर कुत्ते खींचते हैं। इसपर बैठकर एस्किमो सफर करते हैं। छोटे-छोटे घरों को 'इग्गू' कहते हैं। एस्किमों का विश्वास है कि हर जंतु में तथा प्रकृति-सहज हर वस्तु में आत्मा होती है। एस्किमो बरफ़ीले प्रदेशों में निवास करते हैं। उनके परिवारों को देखते हुए, उन परिवारों के साथ रहते हुए विचित्र अनुभूति उत्पन्न होती है।
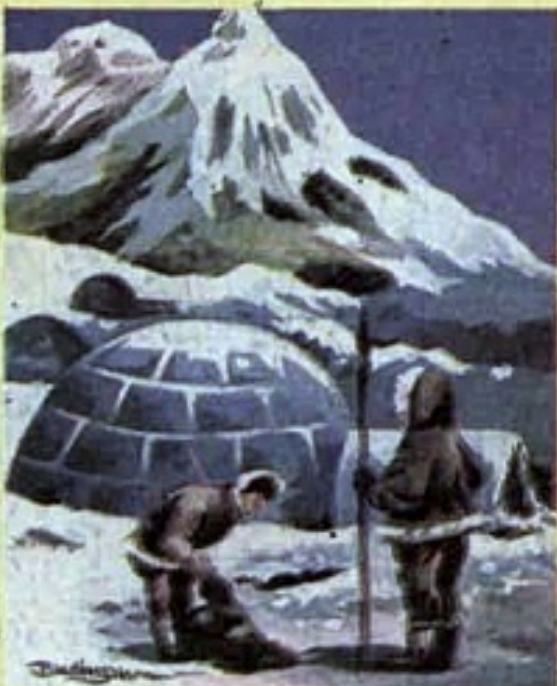
भाग्य-दुर्भाग्य

एक राजा था। वह नास्तिक था। भगवान के अस्तित्व में किंचित मात्र भी उसे विश्वास नहीं था। वह स्वशक्ति पर ही अपार विश्वास रखता था। अन्य शक्तियों में उसका बिल्कुल विश्वास नहीं था। उसके विश्वास जो भी हों, जैसे भी हों, चूंकि शासन सक्रम रूप से संभाल रहा था, इसलिए प्रजा सुखी थी, आराम से ज़िन्दगी काट रही थी। साल में एक बार राजा बहुरूपिया बनकर राज्य-भर घूमता था और जानने की कोशिश करता था कि उसके बारे में प्रजा के क्या अभिप्राय हैं। साथ ही उनके सुख-दुखों के बारे में जानकारी भी प्राप्त करता था।

अपनी आदत के अनुसार राजा एक बार बहुरुपिये के वेष में खेत के बग़ल से गुज़र रहा था। प्यास लगी तो घोड़े से उतरा और एक कुएँ से पानी खींचकर अपनी प्यास बुझायी। अपने चारों ओर जब देखने लगा तो उसने देखा कि बरगद के पेड़ के नीचे एक ग़रीब आदमी बैठा हुआ है। वह बहुत ही चिंतित लग रहा है। उसके मुख पर चिंता स्पष्ट झलक रही है।

राजा ग़रीब के पास आया और पूछा "क्या बात है भाई। ऐसे क्यों बैठ गये? किस बात की चिंता है तुम्हें?" कहते हुए वह उस ग़रीब के बग़ल में बैठ गया।

ग़रीब ने दुख-भरे स्वर में कहा "क्या बताऊँ। जब से होश संभाला है तब से दुख ही दुख सह रहा हूँ। यह भी नहीं जानता कि सुख क्या होता है।"

"अपनी जीविका चलाने के लिए क्या कहीं नौकरी नहीं मिली?" राजा ने पूछा। "कहीं किसी और जगह पर नौकरी करने की क्या ज़रूरत है। ताड़ के उन तीन पेड़ों को देख रहे हो ना। उनके बीच की सारी ज़मीन मेरी ही है। परंतु क्या फ़ायदा। उस

मनोहर जोशी

परमात्मा की कृपा-दृष्टि मुझपर नहीं है।'' कहता हुआ भगवान का स्मरण करते हुए दोनों हाथ जोड़कर नमस्कार किया। राजा नाराज़ हो गया। पर उसे मूर्ख समझते हुए उसने कहा ''मेहनत करोगे तो सुखी रहने के लिए बालिश्त भर की ज़मीन काफी है।''

राजा की उक्ति पर दुखी होता हुआ गरीब बोला ''मैं जानता ही नहीं, सुस्ती क्या होती है। पिछले तीन सालों से मुझपर क्या बीता, मुझसे सुनिये। आप स्वयं जान जाएँगे। पहले साल धान की फ़सल अच्छी हुई। सोचा कि इस साल मैं बड़ा ही भाग्यवान हूँ। मुझपर भगवान की कृपा-दृष्टि है। अनाज बोरों में भरकर घर पहुँचाया। आप शायद समझते होंगे कि मेरा घर बड़ा है। वह तो सूखी घास से ढका हुआ मिट्टी की दीवारों पर खड़ा किया गया छोटा-सा घर है। अच्छी फ़सल हुई, इस खुशी में मैंने अपनी पत्नी से कहा कि बडे पकाओ और मैं साहुकार से मिलने गया। लौटकर देखता हूँ, घर जला जा रहा है। आग की ऊँची-ऊँची लपटों में वह जल रहा है। बात यों हुई। मेरी पत्नी ने चूल्हा जलाया और उसपर बरतन रखकर किसी काम पर बाहर आ गयी। इतने में आपस में झगड़ा करते हुए मेरे दोनों बेटों में से एक बेटा जलती हुई लकड़ी ले आया और दूसरे को धमकी दे रहा था कि आगे बढ़ोगे तो जला दूँगा। मेरी पत्नी ने यह देखा और चिल्ला पड़ी ''कहीं तुम्हारी अक्ल तो मारी नहीं गयी। निकम्मे कहीं के। आग से खिलवाड़ कर रहे हो?'' कहकर उसे पकड़कर मारनेवाली ही थी कि वह डर गया और उस जलती लकड़ी को छत पर फेंक दिया। तुरंत घास की बनी वह छत जल उठी। मेरी पत्नी और बच्चे चिल्लाते रहे। लोग आकर पानी से उस आग को बुझा दें, इसके पहले ही पूरा का पूरा घर जल चुका। तभी मैं साहुकार से मिलकर वापस आया। जान पर खेलकर हमने यथाशक्ति प्रयत्न किया। तब जाकर पाँच बोरों का अनाज मात्र बचा पाये। साथ ही जो थोड़ी-बहुत मेरी संपत्ति थी, खो दी। यह मेरा दुर्भाग्य नहीं तो और क्या है?''

राजा ने ध्यानपूर्वक उसकी बातें सुनीं। फिर कहा ''इस दुर्घटना का मूलकारक है तुम्हारी पत्नी। शरारती बच्चों को घर में छोड़कर जाना बहुत ही खतरनाक है। बच्चों को अनुशासन में रखना माता-पिता का फर्ज़ है। अच्छा, अब आगे बताओ, क्या हुआ।''

ग़रीब को राजा की बातों पर थोड़ा-सा शक हुआ। उसने राजा को संदेह-भरी दृष्टि से देखा और फिर कहा "दूसरे साल भी अच्छी फ़सल हुई। हमने इस बार भी बड़ी ही मेहनत की। मेरी पत्नी ने ग्रामदेवी की पूजाएँ की और प्रार्थना की कि पिछले साल की तरह इस साल भी कोई अनर्थ न हो। हमने इस बार जागरूकता बरती। इस बार हमने अनाज के बोरे घर में न रखने का निश्चय किया। साहुकार से अनुमति लेकर उसके गोदाम में रखने की ठानी। छोटे-मोटे किसानों ने जल्दी ही अनाज दाँवा और बोरों में भरकर ले गये। चूँकि अनाज ज़्यादा था इसलिए दाँवने में एक दिन की देरी हुई। उस दिन पाँच बोरों का अनाज दाँवने के बाद साहुकार के गोदाम में रखवा दिया। बाक़ी काम कल पर टाल दिया। उस दिन रात को भारी वर्षा हुई। लगातार तीन दिन पानी बरसता ही रहा। इससे मेरे साथ-साथ बहुत से किसानों को भारी नष्ट पहुँचा।"

"पहले अग्निदेव ने तुम्हें नष्ट पहुँचाया तो इस बार वरुणदेव ने। मैं तो कहता हूँ कि यह सब तेरी ही ग़लती है। साधारणतया फ़सल को दाँवने के दौरान थोडी-बहुत वर्षा होती रहती है। इसके पहले भी तुमनें चोट खायी, पर सावधानी नहीं बरती। जल्दी ही तुमको अपना काम कर लेना था, पर तुमने देरी की। चार मज़दूरों को काम पर रखते और काम जल्दी पूरा कर लेते।" राजा ने उसी को दोषी ठहराते हुए कहा।

उसकी बातें सुनते ही ग़रीब ने हाथ जोड़े और नमस्कार करते हुए पूछा "महाप्रभू, कहीं आप बहुरुपिये के वेष में आये महाराज तो नहीं हैं?"

राजा ने चकित होकर पूछा "तुम्हें क्यों ऐसा संदेह हुआ?" "जो भी मेरी कहानी सुनेगा, वह मुझपर सहानुभूति दिखायेगा। मेरे दुर्भाग्य पर दो आँसू बहायेगा। किन्तु आपने दोनों बार मेरे दुर्भाग्य पर नहीं, बल्कि मेरी ग़लती पर ही ज़ोर दिया, उँगली उठायी।"

राजा ने उसकी प्रशंसा करते हुए कहा "इस बात की मुझे खुशी है कि तुममें थोड़ा-बहुत तार्किक ज्ञान है। मैं कौन हूँ, बाद मालूम होगा। अब बताओ, तीसरी बार क्या हुआ?"

निर्लिप्त होकर ग़रीब थोड़ी देर तक राजा को देखता रहा। फिर बोला "तीसरी बार

मेरे दुर्भाग्य ने मुझे निगल डाला। स्वामी, पहला साल फिर से घर का निर्माण करने और दूसरा साल घर चलाने के लिए साहुकार से कर्ज़ लेना पड़ा। तीसरा साल याने पिछले साल फ़सल अच्छी ही हुई। फ़सल की कटाई के समय साहुकार को यमधर्मराज बुलाकर ले गया। अब रहा उसका बेटा। वह साक्षात् यमधर्मराज ही है। उसमें दया, सहानुभूति, करुणा आदि सद्‌गुण हैं ही नहीं। दाँवते समय वह सीधे खेत में आया। जमकर वहीं बैठ गया और कहने लगा कि मूल रक़म दोगे कि नहीं। उसके एवज़ में यह अनाज दे दो। मैंने बहुत गिड़गिड़ाया कि थोड़ा-थोड़ा करके किश्तों में चुकाऊँगा पर उसने माना ही नहीं। मेरे लिए थोड़ा-सा अनाज छोड़ दिया और बाक़ी सारा अनाज ले गया। फिर भी वह कहता हुआ गया कि अब भी तुम मेरे कर्ज़दार हो। इसके बाद वह चुप नहीं बैठा। उसने मेरा खेत अपने अधीन कर लिया। उसकी कृपा से उसका नौकर बनकर उसके खेत की देखभाल कर रहा हूँ। वह जो देता है, उसी से अपना और परिवार का पेट भर रहा हूँ। इस साल मैंने कड़ी मेहनत की। उधर देखिये, उस फ़सल को। कितनी हरी-भरी दिख रही है। कटाई के समय साहुकार का बेटा आयेगा और गिद्ध की तरह मेरे कष्टों के फल को अपने मुँह में डालकर उड़ जायेगा और मैं निस्सहाय देखता रह जाऊँगा। मैं ग्रामाधिकारी से उसकी शिकायत नहीं कर सकता, क्योंकि वह साहुकार के बेटे का ससुर है। भला, कोई क्यों अपनी बेटी का अहित करना चाहेगा? अपना दुखड़ा सुनाने उस
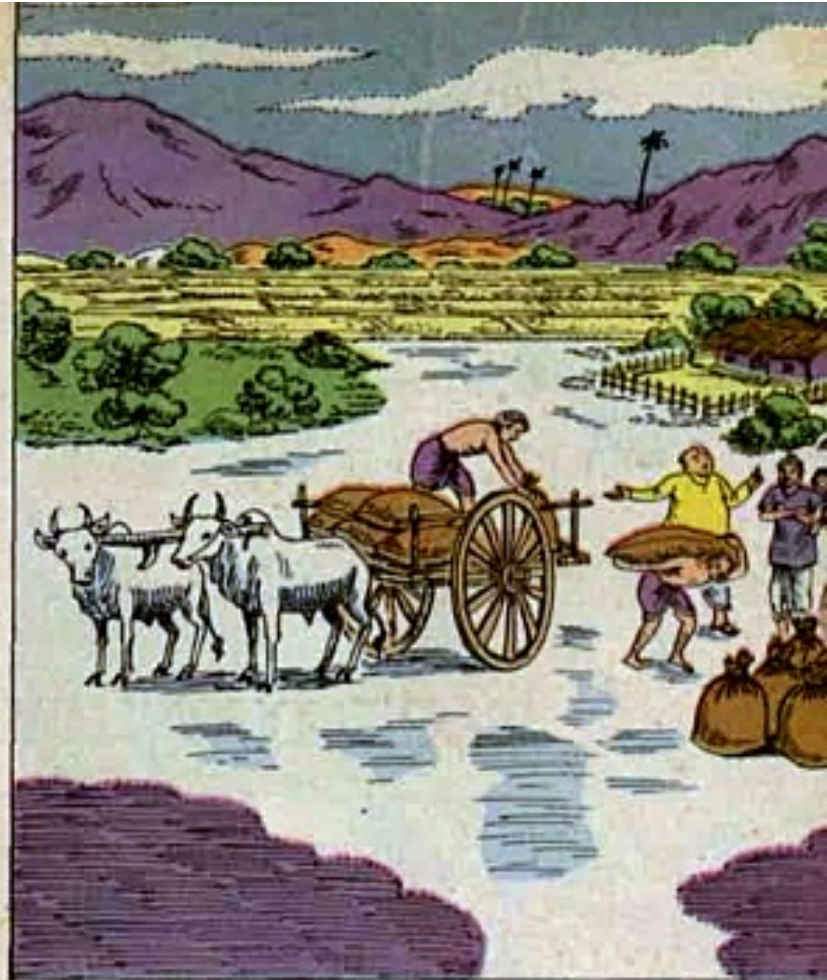
ईश्वर के सिवा और कौन रह गया ? आप ही बताइये, क्या कोई है, जो मेरा दुखड़ा सुनने तैयार है?'' उस ग़रीब ने कहा।

ग़रीब की बातों पर नाराज़ होते हुए राजा ने कहा ''मूर्ख, तुम्हारे साथ जब अन्याय हो रहा है, तब तुम्हें जो करना चाहिये, कर नहीं रहे हो। सर्वेश्वर, दयामयी, करुणानिधि कहकर ज़ोर-ज़ोर से पागल की तरह चिल्ला रहे हो। इसी वजह से तुम्हारी ज़िन्दगी बरबाद हो गयी। ग्रामाधिकारी नहीं सुनेगा तो क्या मंडलाधिकारी नहीं सुनेगा? मंडलाधिकारी भी निठल्ला निकला तो इस देश के राजा नहीं हैं, जो तुम्हारा दुखड़ा सुनते; तुम्हारे साथ न्याय करते। किसी को अपना दुखड़ा सुनाकर इस अन्याय को रोकने के लिए तुम्हें प्रयत्न करना था। उल्टे हे भगवान, हे ईश्वर कहकर चिल्लाते

रहने से क्या फ़ायदा।''

इन बातों को सुनते ही ग़रीब ने फिर से हाथ जोड़े और राजा को नमस्कार करते हुए कहा ''महाप्रभु, आप साक्षात् महाराज ही हैं। इसमें कोई संदेह नहीं। अब रही मेरी बात। मुझे दुर्भाग्य ने अपने चंगुल में फँसा लिया। मेरा दृढ़ विश्वास है कि भाग्यवान को कोई बिगाड़ नहीं सकता, भाग्यहीन को कोई सँवार नहीं सकता। इस कारण मैं कहीं नहीं गया और उस भगवान के भरोसे पर ही जी रहा हूँ।''

यह जानते हुए भी कि वह राजा से बात कर रहा है, अपनी ही पद्धति में बोलते जाते हुए ग़रीब को देखकर राजा और नाराज़ हो गया। उसने व्यंग्य-भरे स्वर में ग़रीब से कहा ''जब भगवान का तुम्हें इतना भरोसा है तो खेत में इतनी मेहनत करने की क्या ज़रूरत है? घर में कंबल ओढ़कर सो भी जाओगे तो तुम्हारे भगवान तुम्हारे लिए आवश्यक सब चीज़ों का प्रबंध करेंगे। तुम्हारा भाग्य चमक उठेगा और तुम बहुत बड़े आदमी बनोगे। है ना?''

ग़रीब जान गया कि राजा नाराज़ हैं। फिर भी डरे बिना उसने कहा ''मैं उन शुष्क वेदांतियों की तरह बात नहीं कर रहा हूँ, जो हवा में जलता दीप रखकर भगवान पर भरोसा रखते हैं और कहते जाते हैं कि हे भगवान, इसे बुझने न देना। प्रभु, मेरा तो विचार है कि हमें उस दीप को हाथों से ढकना चाहिये, जिससे वह न बुझे। तिसपर भगवान की दया। भाग्य ने साथ दिया तो दीप बुझेगा नहीं। वह प्रकाश फैलाता ही रहेगा। यह सूत्र मेरे विषय में और आपके विषय में भी एकसमान लागू होता है।''

राजा अपने क्रोध को छिपा न सका। उबलते हुए क्रोध से उसने कहा ''अरे अभागे, लगता है कि अब अगर मैं उस साहुकार के बेटे को दंड देकर तुम्हारा खेत तुम्हें वापस दिला दूँ तो भी तुम उसे परमेश्वर की ही दया-भिक्षा मानोगे।''

ग़रीब ने विनयपूर्वक कहा ''राजन् आपका अनुमान सही नहीं। मैं इसे आपकी और उस भगवान की, दोनों की दया-भिक्षा मानूँगा। इस संसार में अच्छे लोग उस भगवान के दूत हैं। मुझ जैसे अभागों को सहारा देने के लिए आप जैसे अच्छे लोगों को वही भगवान इस संसार में भेजता है। इसीलिए आप दोनों का सदा कृतज्ञ रहूँगा।''

राजा को वहीं का वहीं उसे तलवार से दो टुकडों में काटने की इच्छा हो रही थी, पर बड़ी ही मुश्किल से उसने अपने आवेश पर काबू पाया और कहा "ठीक है, बताना कि आख़िर तुम कहना क्या चाहते हो ? यही न कि भाग्यवान को कोई बिगाड़ नहीं सकता और भाग्यहीन को कोई सँवार नहीं सकता। अगर कोई कर भी सकता है तो यह केवल भगवान से ही संभव है। यही ना ?"

ग़रीब ने नम्रता से कहा "हाँ प्रभू, यही मेरा विश्वास है। राक्षस-द्वीप में ले जाकर मुझे छोड़ भी देंगे, तो हो सकता है, भाग्य मुझे वरे। आप अपने साथ बिठाकर मुझे राजधानी ले जाएँ तो भी हो सकता है, मेरा दुर्भाग्य मुझे न छोड़े।"

बड़ी ही खुशी से राजा ने ताली बजाते हुए ग़रीब से कहा "अरे मूर्ख, तुम्हारे ही कहे अनुसार तुम्हें राक्षस-द्वीप भेजनेवाला हूँ। छे महीनों के लिए पर्याप्त आहार-पदार्थ भी तुम्हारे साथ भिजवाऊँगा। छे महीनों तक राक्षस-द्वीप में ज़िन्दगी गुज़ारो और उस तथाकथित भाग्य के लिए भगवान की प्रार्थना करते रहो।" कहकर राजा उठ खड़ा हुआ।

राजा की बातें सुनकर ग़रीब थोड़ी देर तक हक्का-बक्का रह गया। उस देश की उत्तरी दिशा में उत्तुंग तरंगों से उमड़ता हुआ समुद्र है। वह समुद्र-तट नित्य आते-जाते समुद्री नौकाओं से बहुत ही व्यस्त दीखता है। समुद्र-व्यापार करनेवाले कितने ही व्यापारी भी उस देश में मौजूद हैं। समुद्र-मध्य स्थित राक्षस-द्वीप के बारे में ये व्यापारी सबको बहुत कुछ बताते रहते हैं।

समुद्र के मध्य भाग में नौकाओं में यात्रा करते हुए यात्रियों, व्यापारियों व नाविकों को वह द्वीप अच्छी तरह दिखायी देता है। उसकी हरियाली, ऊँचे-ऊँचे वृक्ष उन्हें मुग्ध करते हैं। जब व्यापारियों को इस द्वीप के बारे में कुछ भी मालूम नहीं था, तब वहाँ वे विश्राम करने रुकते थे। परंतु जो रुकते थे, उनमें से एक-आध ही बचकर आते थे। शेष सभी उस द्वीप के विचित्र राक्षस का आहार बनते थे। वे कहते रहते थे कि वह राक्षस ताड़ के पेड़ के समान ऊँचा है। छे-सात फुट का लंबा है। हाथ फैलाकर एक ही बार चार-पाँच आदमियों को अपने बाहु-पाश में ले लेता है। इसलिए इसका नाम पड़ा-राक्षस-द्वीप। पिछले कितने ही सालों से किसी ने वहाँ क़दम नहीं रखा।

ग़रीब ने जब सुना कि राजा उसे ऐसे द्वीप में भेजनेवाले हैं तो वह डर से काँप उठा। उसका शरीर ठंडा पड़ गया। उसने काँपते हुए कहा "प्रभू, मेरे मुँह से बात निकल गयी। मैं क्षमा चाहता हूँ। मुझपर दया कीजिये। आप ही बताइये, इस ग़रीब को इतनी बड़ी सज़ा देना क्या उचित है?"

ग़रीब का भय देखकर राजा को आनंद हुआ। उसने हँसते हुए कहा "इस सज़ा से बचना चाहते हो तो बच सकते हो। यह तो तुम्हारे हाथ में है। अगर मान जाओगे कि तुमने अब तक जो भी बातें कहीं, वे झूठ हैं, सरासर ग़लत हैं, तो अभी तुम्हारा खेत तुम्हें मिल जायेगा। तुम्हारा सारा कर्ज़ चुका दिया जायेगा और अलावा इसके, तुम्हें बहुत-सा धन व सोना भी दिया जायेगा।"

ग़रीब ने थोड़ी देर तक सोचा-विचारा। उसे भगवान की याद आयी, जिसपर उसका संपूर्ण विश्वास था। जन्म से लेकर बड़ों से बताये गये विश्वासों की याद आयी, जो उसके रक्त में जीर्ण हो गये थे। उसे लगा कि इन विश्वासों को भुलाकर, उस भगवान को भुलाकर, जिसके भरोसे पर वह जीवन बिता रहा है, स्वार्थ से प्रेरित होकर राजा के हाँ में हाँ मिलाना कृतघ्नता है, नीचता है।

उसने दृढ़ता से कहा "मालिक, अगर मेरा राक्षस-द्वीप में ही मरना ललाट पर लिखा हुआ है तो कोई भी मुझे मरने से बचा नहीं सकता। आप मुझे वहाँ भेजिये। भगवान की जैसी इच्छा है, होगी। अब रही मेरी संतान और पत्नी की बात। आपकी दया और उनका भाग्य।" कहकर उसने हाथ जोड़कर नमस्कार किया।

उसकी इन बातों को सुनकर, राजा में अब तक थोड़ी-बहुत सहानुभूति उस ग़रीब के प्रति थी, उड़ गयी। अब राजा में ज़िद घर कर गया। ग़रीब के ज़रिये ही ग्रामाधिकारी को ख़बर भेजी और ग़रीब के पूरे परिवार को अपने साथ राजधानी ले जाने का प्रबंध करवाया। असली बात क्या है, किसी को मालूम नहीं, इसलिए सबने सोचा कि ग़रीब को भाग्य ने वर लिया।

राजधानी पहुँचते ही राजा ने ग़रीब के परिवारवालों के रहने का आवश्यक इंतज़ाम करवाया। राक्षस-द्वीप की उसकी यात्रा का भी प्रबंध रहस्यपूर्वक कराया। **- सशेष**
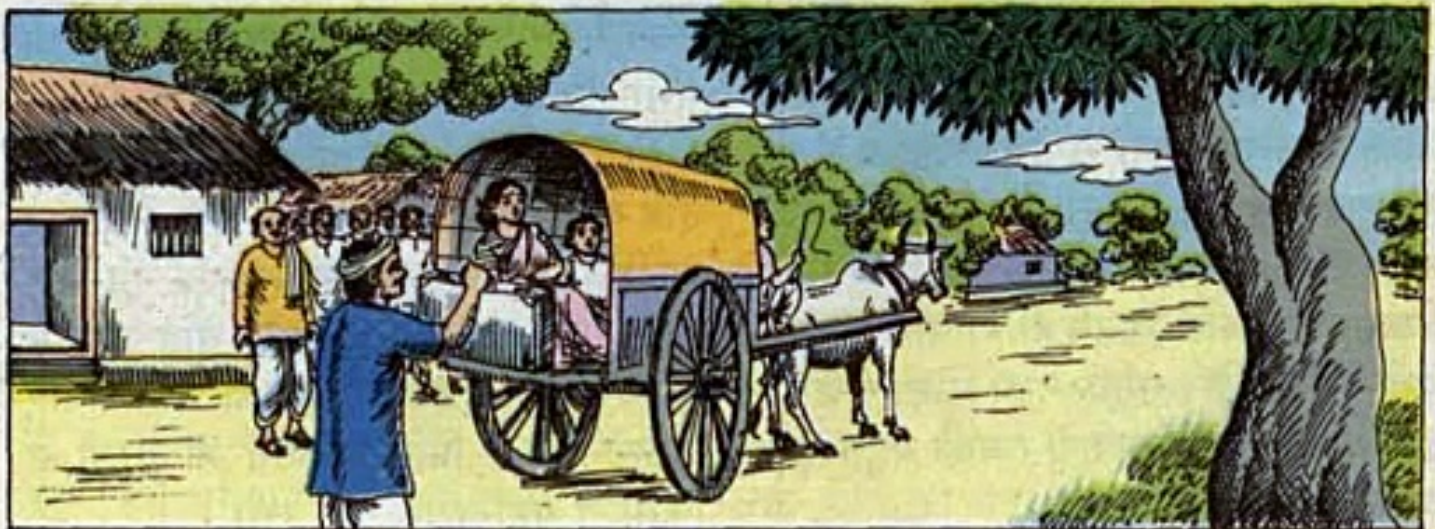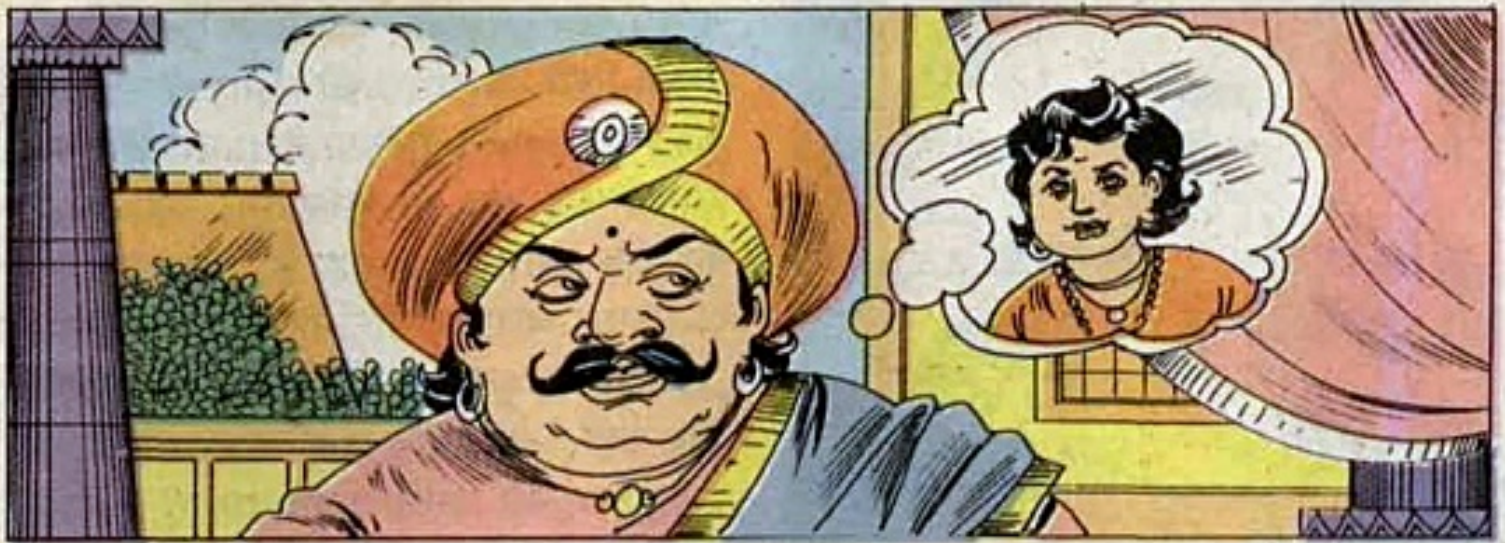
साहसी राजकुमार

धवलपुर के राजा की आकस्मिक मृत्यु के बाद उसका भाई वीरसिंह राजा बना। मरे महाराज का बारह साल की उम्र का एक बेटा था। उसका नाम था, सूर्यसिंह। राजा बनने के बाद वीरसिंह में दुर्बुद्धि जगी। उसने सोचा कि इस सूर्यसिंह को मार डालूँगा तो शाश्वत रूप से राजा बन जाऊँगा।

मंत्री ने वीरसिंह की इस दुर्बुद्धि को ताड़ा और राजकुमार की प्राण-रक्षा करने का निर्णय किया। एक दिन राजकुमार को लेकर चुपके से निकल पड़ा और राज्य की सरहदों पर स्थित कृष्णगढ़ की ओर निकल पड़ा। उस राज्य की रानी थी, उसकी मौसी।

अंजनपुर नामक गाँव पहुँचते-पहुँचते शाम हो गयी। उस गाँव के एक धनिक किसान ने मंत्री व राजकुमार को आश्रय दिया और उनका आतिथ्य किया। हर एक ने राजकुमार को मंत्री के साथ देखकर आश्चर्य प्रकट किया। मंत्री पहले जान नहीं पाया कि इसका क्या कारण है। किसान का बेटा हू ब हू राजकुमार जैसा ही है। उस बालक का नाम है, बलराम। बलराम को देखते ही मंत्री भी चकित रह गया। अब उसकी समझ में आया कि क्यों लोग राजकुमार को आश्चर्य-भरे नेत्रों से देख रहे हैं। मुख में, आकार में, लंबाई में, आख़िर चाल में भी राजकुमार और बलराम में एकदम साम्य है। लगता है, दोनों जुडवे बालक हैं।

मंत्री को लगा कि बलराम को भी अपने साथ रखूँ तो उपयोग होगा, इसलिए उसने किसान से कहा "तुम अपने पुत्र को राजकुमार का साथी बनाकर भेजोगे तो भविष्य में उसका भला होगा। मैं तुम्हें काफ़ी धन भी दूँगा।" किसान ने बख़ूशी मंत्री की बात मान ली।

मंत्री राजकुमार और बलराम को लेकर

पचीस वर्ष पूर्व 'चन्दामामा' में प्रकाशित कहानी

निकल पड़ा। चार दिनों तक सफ़र किया और कृष्णगढ़ पहुँचे। इस सफ़र में राजकुमार और बलराम घने दोस्त बने। कृष्णगढ़ की महारानी ने अतिथियों के लिए अच्छे प्रबंध किये। दिन गुज़रते-गुज़रते राजकुमार व बलराम की मैत्री और गाढ़ी होती गयी।

लंबे अर्से के बाद वीरसिंह को मालूम हुआ कि राजकुमार कृष्णगढ़ में है। उसने सेना को लेकर कृष्णगढ़ को घेर लिया।

धवलपुर का मंत्री चाहता नहीं था कि उसके कारण उसकी मौसी विपदा में फँस जाए, इसलिए सफ़ेद झंडा लेकर वीरसिंह से सुलह करने निकल पड़ा। वीरसिंह ने शर्त रखी कि राजकुमार उसे सौंपा जाए तो कृष्णगढ़ को बिना हानि पहुँचाये लौट जाऊँगा। अब मंत्री असमंजस स्थिति में पड़ गया। राजकुमार को बचाने के लिए जो भी प्रयत्न किये, वीरसिंग की माँग को स्वीकार करने पर विफल हो जाएँगे। अब वह करे क्या? परंतु अब भी राजकुमार को बचाने का एक मार्ग है। वह है, बलराम को राजकुमार बताकर वीरसिंह को सौंप देना।

मंत्री ने बलराम को एकांत में बुलाया और कहा "पुत्र, शत्रु राजा चाहता है कि मैं राजकुमार को उसके सुपुर्द कर दूँ। ऐसा करूँगा तो हो सकता है, वह राजकुमार को मार दे। तुम्हें राजकुमार बताकर उसे सौंप सकता हूँ। शत्रुराजा जान नहीं पायेगा कि तुम राजकुमार नहीं हो। किन्तु मैं ऐसा करूँगा तो शायद तुम्हारी जान खतरे में पड़ सकती है। मेरी समझ में नहीं आता कि इस स्थिति में मैं क्या करूँ।"

बलराम ने मंत्री की बातें सुनकर कहा "महोदय, मेरी जान चली जाए तो कोई नष्ट पहुँचनेवाला नहीं है। किन्तु राजकुमार जीवित रहेगा तो हो सकता है, अपना राज्य पुनः प्राप्त कर ले और राजवंश स्थिर रहे। मुझे शत्रुराजा के पास भेजिये। परंतु हाँ, यह बात राजकुमार को मालूम न हो।"

बलराम की बातों से मंत्री बहुत प्रसन्न हुआ। राजकुमार के आभरणों से बलराम को सजाया और कुछ सैनिकों के साथ उसे कृष्णगढ़ के क़िले के बाहर भेजा, जहाँ वीरसिंह पडाव डाला हुआ था।

बलराम के चले जाने के थोड़ी देर बाद राजकुमार उसे ढूँढ़ने लगा। मालूम हुआ कि सिपाही उसे क़िले के बाहर ले गये। उसे मालूम था कि उसके चाचा ने क़िले को घेर

लिया और उसकी जान लेने के लिए तैयार बैठा है। उसे यह भी मालूम था कि बलराम को देखनेवाला हर व्यक्ति इसी भ्रम में होगा कि यही राजकुमार है। उसने एक सिपाही की तलवार छीन ली और बड़े वेग से क़िले के बाहर गया।

जैसे ही बलराम, वीरसिंह के पडाव में पहुँचा, वहाँ उपस्थित सब सैनिकों ने समझा कि यही राजकुमार है और आपस में कहने लगे "हमारे छोटे महाराज आ गये।" वे खुशी से चिल्लाने लगे। वीरसिंह ने उन सबको बाहर भेज दिया और बलराम से कहा "इतने लंबे अर्से के बाद मेरे हाथ आये। तुम मेरे और सिंहासन के बीच की रुकावट हो। तुम्हें अभी मार डालूँगा और अपना मार्ग निष्कंटक बनाऊँगा।" कहकर उसने तलवार चलायी।

बलराम निर्भीक खड़ा रहा। उसने कहा "मुझे मारने से तुम्हारी भलाई नहीं होगी। जो सिंहासन है, उसे भी खो दोगे।" वीरसिंह बलराम पर टूट पड़ा। बलराम उसकी पकड़ में नहीं आ रहा था, क्योंकि वह बड़ी ही चालाकी से इधर-उधर भाग रहा था। इतने में पडाव के द्वार के पास खड़ा राजकुमार चिल्ला पड़ा "ठहरो।" वीरसिंह उसे देखकर भौंचक्का रह गया। उसकी समझ में नहीं आया कि एक ही आकार के दो राजकुमार उसके पडाव में कैसे आये। इस असमंजस स्थिति में उसके हाथ की तलवार ज़मीन पर गिर गयी। दूसरे ही क्षण राजकुमार, वीरसिंह पर पिल पड़ा और एक ही वार में उसका सिर काट दिया।

वीरसिंह की मौत की ख़बर सुनते ही सैनिकों ने राजकुमार को घेर लिया। किन्तु जब उन्हें जब मालूम हुआ कि वीरसिंह ने राजकुमार को मारकर राज्य हड़पना चाहा तो वे राजकुमार के साहस पर बहुत खुश हुए। उन्हें लगा कि राजकुमार ने जो किया, ठीक ही किया।

इसके बाद मंत्री राजकुमार व बलराम को लेकर राजधानी पहुँचा। शीघ्र ही राजकुमार का राज्याभिषेक हुआ। राजप्रतिनिधि बनकर मंत्री ने कुछ समय तक राज्य-भार संभाला। जब यह बालिग़ हुआ तब मंत्री ने राज्य-भार राजकुमार को सौंपा। बलराम अनेकों जागीरों का अधिपति बना और उसका आत्मीय मित्र बनकर जीवन-पर्यंत अपनी दोस्ती निभायी।

फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता : : पुरस्कार रु. १००

पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ, अगस्त, १९९७ के अंक में प्रकाशित की जाएँगी ।
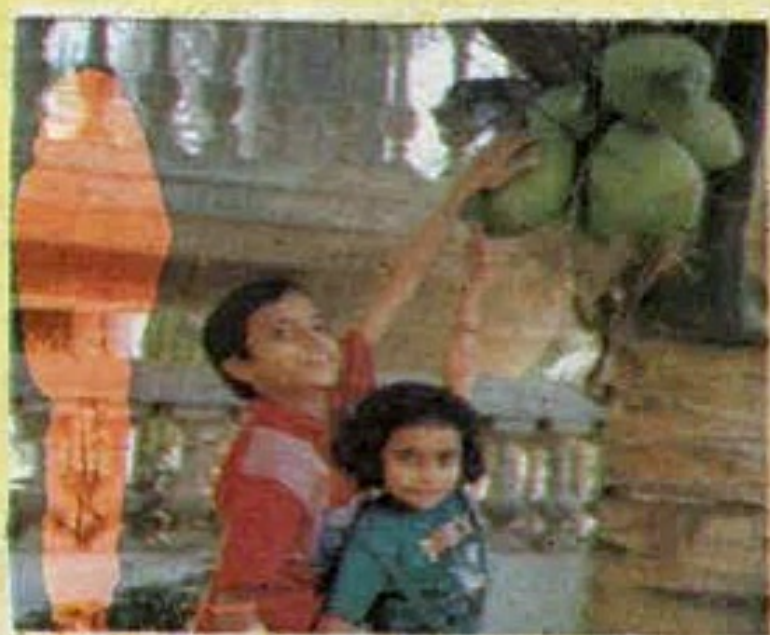
K. SUBRAHMANYAM

MAHANTESH C. MORABAD

✳ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ एक शब्द या छोटे वाक्य में हों। ✳ '३० जून, ९७ तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए। ✳ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) रु. १००/- का पुरस्कार दिया जायेगा। ✳ दोनों परिचियोक्तियाँ केवल कार्ड पर लिखकर इस पते पर भेजें।

चन्दामामा, चन्दामामा फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता, मद्रास - २६.

अप्रैल, १९९७ की प्रतियोगिता के परिणाम

पहला फोटो : **मिट्टी पानी आग से जोडा**

दूसरा फोटो : **पानी भर लायी मैं थोड़ा**

प्रेषक : **भारती शर्मा**

C/o. श्री तरुण कुमार शर्मा, टूल्स & बेरिंग सेंटर, ४ तल्ला, कमरा सं. १६, ४०, स्ट्रांड रोड, कलकत्ता - ९.

चन्दामामा

भारत में वार्षिक चंदा : रु. ७२/-

चन्दा भेजने का पता :

डाल्टन एजन्सीज़, चन्दामामा बिल्डिंग्ज, वडपलनी, मद्रास - ६०० ०२६

Printed by B.V. REDDI at Prasad Process private Ltd., 188, N.S.K. Salai, Madras - 600 026 (India) and Published by B. VISHWANATHA REDDI on behalf of CHANDAMAMA PUBLICATIONS, Chandamama Buildings, Vadapalani, Madras - 600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.